04- लोगों का काम है कहना: पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए...

05- संस्कृति, संस्कार आधारित चित्रण और भारतीय कला



A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 06 सितंबर, 2024

06- बैडमिंटन हॉल में खिलाड़ियों को होना पड़ रहा परेशान, सफाई

07- ऑस्कर की भीड़ में अकेली 'लापता लेडीस'



भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22 अंक 39 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)



सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews


छलांग ...

फोटो-गिरीश शर्मा

# अगर हम बंटेंगे तो बांटने वाले महफिल सजाएंगे

## ठाणे में पीएम मोदी का कांग्रेस के अगुवाई वाले एमवीए पर बड़ा हमला

**मुंबई/ठाणे (एजेंसी)।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने महाराष्ट्र दौरे पर एक बार फिर महाविकास आघाडी यानी इंडिया अलायंस पर निशाने पर लिया। कांग्रेस पार्टी का जिक्र करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि कांग्रेस जानती है कि उनका वोट बैंक तो एक रहेगा, लेकिन बाकी लोग आसानी से बंट जाएंगे। कांग्रेस और उनके साथियों का एक ही मिशन है, समाज को बांटो और सत्ता पर कब्जा करो। इसलिए हमारी एकता को ही देश की ढाल बनाना है, हमें याद रखना है कि अगर हम बंटेंगे तो बांटने वाले महफिल सजाएंगे। हमें कांग्रेस और अघाड़ी वालों के मंसूबों को कामयाब नहीं होने देना है। पीएम मोदी ने कहा कि आज कांग्रेस का असली रंग खुल कर सामने आ गया है। कांग्रेस को अब अर्बन नक्सल का गैंग चला रहा है। पूरी दुनिया में जो लोग भारत को आगे बढ़ने से रोकना चाहते हैं, कांग्रेस अब खुलकर उनके साथ खड़ी है। इसलिए अपनी घोर असफलता के बावजूद कांग्रेस, सरकार बनाने का सपना देख रही है। पीएम ने कहा कि कांग्रेस जानती है कि उनका वोट बैंक तो एक रहेगा, लेकिन बाकी लोग आसानी से बंट जाएंगे। कांग्रेस और उनके साथियों का एक ही मिशन है, समाज को बांटो और सत्ता पर कब्जा करो। इसलिए हमारी एकता को ही देश की ढाल बनाना है, हमें याद रखना है कि अगर हम बंटेंगे तो बांटने वाले महफिल सजाएंगे। हमें कांग्रेस और अघाड़ी वालों के मंसूबों को कामयाब नहीं होने देना है। पीएम मोदी ने कहा कि हिमाचल में कांग्रेस सरकार ने तो हद ही कर ही है। पीएम मोदी ने कहा कि कांग्रेस यानी लूट और फरेब का पूरा पैकेज है। पीएम मोदी ने कहा कि कांग्रेस, भारत की सबसे बेईमान और भ्रष्ट पार्टी है। चाहे कोई भी दौर हो, कोई भी राज्य हो, कांग्रेस का चरित्र नहीं बदलता है। पीएम मोदी ने कहा कि आप पिछले एक हफ्ते का हाल देख लीजिए।

### एग्जिट पोल

## हरियाणा के 8 पोल में कांग्रेस सरकार के आसार

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** हरियाणा और जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव की वोटिंग खत्म हो चुकी है। अब तक हरियाणा के 8 और जम्मू-कश्मीर के 5 एग्जिट पोल सामने आए हैं। हरियाणा के सभी 8 एग्जिट पोल में कांग्रेस की सरकार बनती दिख रही है। भाजपा के 21 सीटों तक सिमटने के आसार हैं। जम्मू-कश्मीर के एग्जिट पोल में से 3 में कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस की सरकार बनती दिख रही है। एक में पीडीपी के सबसे बड़ी पार्टी बनने के अनुमान हैं। हरियाणा और जम्मू-कश्मीर की 90-90 सीटों पर वोटिंग पूरी हो चुकी है। नतीजों का ऐलान 8 अक्टूबर को होगा। इन राज्यों में सरकार बनाने के लिए 46 सीटों पर जीत की जरूरत है। चुनाव से पहले सिर्फ दो एजेंसियों ने ओपिनियन पोल कराए थे। हरियाणा में टाइम्स नाउ-मैट्रिज के ओपिनियन पोल में त्रिशंकु विधानसभा के आसार हैं। जम्मू और कश्मीर में लोकपोल ओपिनियन सर्वे के मुताबिक, कांग्रेस और एनसी की सरकार बनती दिख रही है।

### पैगंबर मोहम्मद पर टिप्पणी

# यति नरसिंहानंद पुलिस हिरासत में

**लखनऊ (एजेंसी)।** उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद के पैगंबर मोहम्मद पर दिए बयान पर बवाल जारी है।

बुलंदशहर में शुक्रवार देर रात मुस्लिम समुदाय के हजारों लोग सड़क पर उतर आए। नारेबाजी कर रहे लोगों ने पुलिस पर पथराव दिया। हालात काबू करने के लिए रात में ही पीएसी को बुलाना पड़ा। गाजियाबाद में भी मुस्लिम समुदाय के हजारों लोगों ने शुक्रवार रात को डासना मंदिर का घेराव किया। नरसिंहानंद इसी मंदिर के पीठाधीश्वर हैं। घेराव के समय वे मंदिर के अंदर ही थे। पुलिस ने रात 12 बजे तक भीड़ को मंदिर के बाहर से हटाया। मेरठ, मथुरा और मुरादाबाद में भी मुस्लिम समाज ने प्रदर्शन किया। यहां पुलिस ने संवेदनशील इलाकों में फ्लैग मार्च किया। विवाद के बीच पुलिस ने नरसिंहानंद को हिरासत में ले लिया है। डासना मंदिर के बाहर फोर्स तैनात कर

दी गई है। पश्चिमी यूपी में हाई अलर्ट घोषित कर दिया गया है।यति नरसिंहानंद ने 29 सितंबर को गाजियाबाद में एक कार्यक्रम में पैगंबर मोहम्मद साहब को लेकर विवादित बयान दिया था।

## सुप्रभात

समय उन पर रहम करना
वे दुनिया को उदास बनाने में
शामिल नहीं थे।
वे खुशी को शुक्रिया नहीं कह पाए
वह कभी आई ही नहीं उनके कैंप में।
क्षमा हो, उनका एक ही अपराध था
वे मिसाइलों, बमों और
मशीनगनों से डरते थे।

उन पर रहम करना
उन्होंने नहीं चुना था पलायन,
न ही विस्थापन
वे खदेड़े जाने तक
अपनी स्मृतियों को
खूँटियों पर टाँगते रहे थे।
वे बेदख़ल किए गए
अपनी हवा, मिट्टी, पानी सबसे
सपनों की तरह
ध्वस्त हो गया उनका वतन
एक देह ही शेष बची
सब कुछ खोने के दर्द के साथ।

पूर्वजों की तरह उनकी औलादें
युद्ध की समिधा नहीं बने
वे शरणार्थी कैंपों में उनकी तरह
दिन का अंश-अंश नहीं गिने
बचे उनकी प्रार्थनाओं में प्रेम।
उनकी राहें आसान करना
ईश्वर, ईसा और अल्लाह।

**- धर्मपाल महेंद्र जैन**

### छत्तीसगढ़ नक्सली ऑपरेशन

# 1000 जवानों ने 31 लाशें 40 किमी कंधे पर लादकर ले गए

**नारायणपुर (एजेंसी)।** दंतेवाड़ा-नारायणपुर जिले के बॉर्डर पर सुरक्षाबलों ने नक्सलियों के खिलाफ सबसे बड़ा ऑपरेशन लॉन्च किया। करीब 1000 जवानों ने महज 2 घंटे की मुठभेड़ में ही 31 नक्सलियों को मार गिराया। सभी के शव बरामद कर लिए गए हैं। पुलिस के जवान 3-4 पहाड़ और नदी-नाले पार कर नक्सलियों के ठिकाने पर पहुंचे थे। पूर्वी बस्तर डिवीजन कमेटी की लीडर नीति के मारे जाने की खबर है। नीति पर 8 से 10 लाख रुपए का इनाम घोषित था। जवान अब भी मौके पर ही मौजूद हैं। सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है। मारे गए माओवादियों की संख्या बढ़ सकती है। इसे अब तक सबसे बड़ा एंटी नक्सल ऑपरेशन बताया जा रहा है। इससे पहले कांकेर में 29 माओवादी मारे थे। भारी बारिश की वजह से नक्सलियों को जवानों के आने की भनक भी नहीं लग पाई। वहीं 4 अक्टूबर को दोपहर एक बजे जवान नक्सलियों के बेहद करीब पहुंच गए थे, जिसके बाद जवानों ने ही फायरिंग की।

- रोटी-मैगी खाकर सफर पूरा किया
- नक्सलियों के खिलाफ सबसे बड़ा ऐक्शन

### रानी दुर्गावती के किले की तर्ज पर बने ओपन एरिया हुई बैठक

# मोहन कैबिनेट ने दी जैन आयोग को मंजूरी

**भोपाल (नप्र)।** 5 अक्टूबर को दमोह जिले के सिंग्रामपुर में हुई मोहन कैबिनेट की बैठक में जैन आयोग के गठन को मंजूरी दी गई है। मध्यप्रदेश में इस बार दशहरा लोकमाता अहिल्याबाई के नाम मनाया जाएगा। वहीं, लाड़ली बहनों के खातों में 1574 करोड़ रुपए ट्रांसफर किए गए हैं।

दरअसल, नवरात्र पर्व पर मातृशक्ति को नमन करने के लिए रानी दुर्गावती की जयंती के मौके पर मोहन सरकार की ओपन एयर कैबिनेट शनिवार को दमोह जिले के सिंग्रामपुर हुई। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा था कि रानी दुर्गावती की 500वीं जयंती के उपलक्ष्य में पहली कैबिनेट की बैठक जबलपुर में की थी। राज्य शासन ने मातृ शक्ति को सम्मान देते हुए स्वतंत्रता संग्राम, सुशासन, साहस जैसे क्षेत्रों में राष्ट्र के लिए योगदान देने वाली

वीरांगनाओं, शासिकाओं की स्मृति में ये पहल की है। इसी के तहत आज वीरांगना रानी दुर्गावती की 500वीं जयंती पर सरकार ने उनकी प्राचीन राजधानी सिंग्रामपुर में ओपन-एयर (खुला क्षेत्र) कैबिनेट मीटिंग की है।

कैबिनेट की ये बैठक रानी दुर्गावती के सुशासन, उनकी कार्यकुशलता और महिलाओं के सशक्तिकरण से प्रेरित है। इस बैठक का डिजाइन रानी दुर्गावती के किले की भव्यता को प्रतिबिंबित करता है। जिसमें एक किलानुमा प्रवेश द्वार और शिव मंदिर भी शामिल हैं।

पहले इंदौर में लोकमाता अहिल्या बाई होल्कर की 300वीं जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। अब रानी दुर्गावती के सम्मान में मंत्रिपरिषद की बैठक दमोह के सिंग्रामपुर में उनकी जयंती पर की जा रही है।

**कैबिनेट में जैन आयोग को मंजूरी मिली-** मंत्री प्रहलाद पटेल ने कहा, जैन आयोग को मंजूरी दी है। एक अध्यक्ष और एक उपाध्यक्ष होगा। दिगंबर जैन समाज और श्वेतांबर जैन समाज के अध्यक्ष दो-दो साल के लिए होंगे। इनके ऑफिस और मानदेय का प्रबंध भी है। ये हमारे घोषणा पत्र का हिस्सा भी था।

**गोंड गांव की तर्ज पर सजी है रसोई-** जहां मंत्री और अतिथि भोजन करेंगे वह खाद्य क्षेत्र एक पारंपरिक गोंड गांव के आंगन की तर्ज पर सजाया गया है, जहां मेहमान पेड़ों के नीचे बैठकर, हटा से लाए गए प्राचीन कांसे के बर्तनों में परोसा गया भोजन का आनंद ले सकेंगे। इसके अलावा मंत्रियों के लिए विशेष कार्यालय गोंड कला और भित्ति चित्रों से प्रेरित होकर बनाए जा रहे हैं, जो कार्य-क्षमता और सांस्कृतिक सौंदर्य का अनूठा संगम प्रस्तुत करेंगे।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 36.3 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 06 अक्टूबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

# कोलकाता रेप केस में 4 पुलिसकर्मी सीबीआई के घेरे में

- रात की ड्यूटी पर थे तैनात,सबूतों से छेड़छाड़ की है आशंका

## आरजी कर मेडिकल कॉलेज-अस्पताल में ड्यूटी पर थे तैनात

**कोलकाता (एजेंसी)।** कोलकाता पुलिस के चार पुलिसकर्मी सीबीआई की जांच के घेरे में हैं। ये पुलिसकर्मी 9 अगस्त की सुबह आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में ड्यूटी पर थे। सीबीआई अस्पताल परिसर में जूनियर डॉक्टर के साथ बलात्कार और हत्या की जांच कर रही है। महिला डॉक्टर का शव 9 अगस्त को अस्पताल के सेमिनार रूम में मिला था। घटनाक्रम से अवगत सूत्रों ने बताया कि उस समय अस्पताल में ड्यूटी पर मौजूद इन चार पुलिसकर्मियों का बयान जांच अधिकारियों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, ताकि शव मिलने के बाद सबूतों के साथ हुई संभावित छेड़छाड़ के बारे में साफ जानकारी मिल सके। जांच अधिकारी एक महिला पुलिसकर्मी समेत इन चार पुलिसकर्मियों से पहले ही पूछताछ कर चुके हैं। उन्होंने उनसे पूछा था कि 9 अगस्त की सुबह पीड़िता के शव के पास उन्होंने किस तरह की गतिविधियां देखीं और क्या उन्हें इस

मामले में अपने उच्च अधिकारियों से कोई आदेश या निर्देश मिला था। यदि जरूरी हुआ तो इन चारों पुलिसकर्मियों से दोबारा पूछताछ की जाएगी। सूत्रों ने बताया कि जांच अधिकारी फिलहाल आरजी कर अस्पताल में लगे सीसीटीवी के फुटेज पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। ये फुटेज उन्हें कोलकाता पुलिस से मिले थे। पुलिस ने मामले की शुरुआती जांच की थी। सूत्रों ने बताया कि इस मामले में जांच अधिकारियों के सामने चुनौती यह है कि क्या सीसीटीवी फुटेज के साथ भी कोई छेड़छाड़ की गई थी। सीबीआई ने शुक्रवार को कोलकाता की एक विशेष अदालत को बताया था कि बलात्कार और हत्या को आत्महत्या का मामला बताने की शुरुआती कोशिश की गई थी। सूत्रों के अनुसार, अब तक जांच अधिकारियों ने पूर्व और विवादास्पद प्रिंसिपल संदीप घोष और ताला पुलिस स्टेशन के पूर्व एसएचओ अभिजीत मंडल की पहचान सबूतों से छेड़छाड़ के पीछे के मास्टरमाइंड के रूप में की है।

## संक्षिप्त समाचार

### चतुर्थ मां कूष्माण्डा

कू' का अर्थ है छोटा, 'ष्' का अर्थ है ऊर्जा और 'अंडा' का अर्थ है ब्रह्मांडीय गोला सृष्टि या ऊर्जा का छोटे से वृहद ब्रह्मांडीय गोला। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में ऊर्जा का संचार छोटे से बड़े में होता है। यह बड़े से छोटा होता है और छोटे से बड़ा; यह बीज से बढ़ कर फल बनता है और फिर फल से दोबारा बीज हो जाता है।

### मैंने हथियार छोड़ दिए अब मैं गांधीवादी हूं

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** जम्मू और कश्मीर लिबरेशन फ्रंट-यासीन (जेकेएलएफ-वाई) के अध्यक्ष यासीन मलिक ने यूएपीए कोर्ट में एक हलफनामा दाखिल किया है। इसमें उसने कहा कि हथियार के बल पर विरोध-प्रदर्शन के तरीके का त्याग करते हुए गांधीवादी तरीका अपना लिया है। यासीन ने कहा कि 1994 से

ही उसने हथियार और हिंसा छोड़ दी है। यासीन मलिक टेरर फंडिंग के मामले में दिल्ली की तिहाड़ जेल में उम्रकैद की सजा काट रहा है। बता दें कि यासीन मलिक के संगठन जेकेएलएफ-वाई पर अगले 5 साल के लिए बैन लगा दिया गया है। यासीन की ओर से जो हलफनामा पेश किया गया है उसका जिक्र यूएपीए कोर्ट द्वारा पिछले महीने जारी किए गए आदेश में किया गया है। गुरुवार को राजपत्र में भी इसे प्रकाशित किया गया है।

### ठीक से काम नहीं कर रहा इंडिगो का नेटवर्क

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** देश की सबसे बड़ी इंडिगो का नेटवर्क-वाइड सिस्टम आउटेज का सामना कर रहा है। इस कारण यात्रियों को चेक-इन और बैगेज ड्रॉप के लिए एयरपोर्ट्स पर लंबी प्रतीक्षा का सामना करना पड़ रहा है। कंपनी ने खुद ट्वीट करके इसकी जानकारी दी है। करीब 12.30 पर सिस्टम में तकनीकी समस्या आई। इससे पूरे देश में फ्लाइट ऑपरेशंस और ग्राउंड सर्विसेज पर असर पड़ा है। इंडिगो ने 1.44 बजे एक्स पर लिखा कि हम



वर्तमान में अपने पूरे नेटवर्क में एक अस्थायी सिस्टम स्लोडाउन का सामना कर रहे हैं। इससे हमारी वेबसाइट और बुकिंग सिस्टम पर असर हुआ है। इस कारण ग्राहकों को प्रतीक्षा समय बढ़ गया है। चेक-इन प्रोसेस धीमा हो गया है और एयरपोर्ट पर लंबी कतारें शामिल हैं। कंपनी ने कहा कि हमारी एयरपोर्ट टीम सभी की सहायता करने और एक सुगम यात्रा सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह से समर्पित है। इंडिगो ने यात्रियों से कहा,आश्वस्त रहें, हम जल्दी से जल्दी सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए काम कर रहे हैं।

### पीएम ने किया एमईआईएल की परियोजनाओं का उद्घाटन

**भोपाल।** पीएम कुसुम के तहत 19 मेगावाट की कुल क्षमता वाली पांच अत्याधुनिक सौर ऊर्जा परियोजनाएं उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उद्घाटन किया। महाराष्ट्र में ये परियोजनाएं धोंडलगांव (संभाजी नगर), बामनी (नांदेड़), हरोली (कोल्हापुर), जलालाबाद (अकोला) और पलाशी (बुलढाणा) में स्थापित की गई हैं। हैदराबाद के मेघा इंजीनियरिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड (एमईआईएल) ने प्रधान मंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान की तहत इसका निर्माण किया है।

ये सौर ऊर्जा संयंत्र किसानों को उनके खेतों के लिए निर्बाध बिजली प्रदान करेंगे और बिजली बिल का बोझ कम करेंगे। इस योजना का लक्ष्य कृषि उत्पादन बढ़ाना और अधिक बिजली को ग्रिड से जोड़ के उसका मुनाफा किसानों तक पहुंचाना ये है ।पीएमकुसुम के तहत सिंचाई के लिए सौर पैनल उपलब्ध कराने से किसानों को दिन में बिजली मिलने से कृषि सिंचाई आसान हो जाएगी और पानी और बिजली की अत्यधिक खपत से बचा जा सकेगा।

पीएम कुसुम योजना के तहत, एमईआईएल महाराष्ट्र के नौ जिलों कोल्हापुर, सातारा, अकोला, बुलढाणा, वाशिम, जालना, जलगांव और नांदेड़ में 1880 मेगावाट की कुल क्षमता वाली 404 उन्नत सौर परियोजनाएं शुरू कर रहा है। वर्तमान में उद्घाटन की गई परियोजनाएं 404 प्रस्तावित सौर संयंत्रों में से हैं। शेष स्थानों पर सोलर प्लांट का निर्माण विभिन्न चरणों में है।

# बच्चों में पौधारोपण की आदत डालना जरूरी

**भोपाल।** सोशल वेलफेयर सोसाइटी द्वारा विज्ञान प्रौद्योगिकी के सहयोग से एयू हायर सेकेण्डरी स्कूल गोविन्द पुरा भोपाल में'प्लास्टिक कचरे का पर्यावरण पर प्रभाव' विषय पर व्याख्यान, चित्र कला, तथा पौधरोपण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम वृक्ष मित्र सुनील दुबे के मुख्य आतिथ्य में तथा विशिष्ट अतिथि मो. फारुख खान, डॉ रेणु राय, स्कूल प्राचार्य मो. कलीम अख्तर की उपस्थिति में हुआ। स्कूल के बच्चों ने प्लास्टिक कचरे का पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव विषय पर करीब पचास पेन्टिंग बनाई। विषय विशेषज्ञ के रूप में वृक्ष मित्र सुनील दुबे, शादमा खान, समाजिक कार्यकर्ता सतीश पुरोहित, डॉ रेणु राय, ने पर्यावरण में प्लास्टिक का दुषप्रभाव पर अपने-अपने विचार रखें। इस अवसर पर स्कूल परिसर में औषधीय पौधों का रोपण किया गया। कार्यक्रम का संचालन संस्था सचिव मो. सलीम खान ने किया। कार्यक्रम में उत्कृष्ट चित्राकंन के लिए बच्चों को पुरस्कार भी दिए गए। कार्यक्रम में पत्रकार विनीत अग्रवाल, शिवंम दुबे, मो.सईद खान, संस्था प्रमुख साजिदा खान, अध्यक्ष आशमा खान, आंजुम खान सहित स्कूल शिक्षक-शिक्षिकाओं की उपस्थिति रही।

# राज्यपाल श्री पटेल ने रानी दुर्गावती की जयंती पर की पुष्पांजलि अर्पित

## राजभवन में वीरांगना रानी दुर्गावती की 500 वीं जयंती मनाई गई

**भोपाल (नप्र)।** राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने वीरांगना रानी दुर्गावती की 500 वीं जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित की। उन्होंने गोंडवाना साम्राज्य की गौरव रानी दुर्गावती के चित्र पर माल्यार्पण और पुष्प अर्पण कर नमन किया।

राजभवन में आयोजित कार्यक्रम में राजभवन के अधिकारी और कर्मचारियों ने भी वीरांगना रानी दुर्गावती को पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर राजभवन नियंत्रक श्रीमती शिल्पी दिवाकर एवं अन्य अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित थे।

# राहुल ने कोल्हापुर में किया शिवाजी की प्रतिमा का अनावरण

## बोले-सिंधुदुर्ग में मूर्ति टूटी क्योंकि नीयत साफ नहीं थी,हम उसी विचारधारा के खिलाफ

**मुंबई (एजेंसी)।** कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शनिवार को भाजपा सरकार पर हमला करते हुए कहा कि लोगों को डराने और देश में संविधान को नष्ट करने के बाद शिवाजी महाराज के सामने झुकने का कोई फायदा नहीं है। वे कोल्हापुर में शिवाजी महाराज की मूर्ति का अनावरण करने पहुंचे थे। राहुल ने कहा- नीयत दिख जाती है। उसे छिपा नहीं सकते। उन्होंने मूर्ति बनाई, जो कुछ दिन बाद टूट गई। उनकी नीयत गलत थी। शिवाजी महाराज की मूर्ति ने मैसेज दिया कि आप मूर्ति बनाओगे तो शिवाजी विचारधारा की रक्षा भी करनी पड़ेगी। इसके बाद वे संविधान सम्मेलन में शामिल हुए। जहां उन्होंने कहा कि आरक्षण से 50 फीसदी की सीमा को हटाने के लिए कांग्रेस और इंडिया ब्लॉक कानून लेकर आएगी। विधानसभा चुनाव से पहले राहुल का यह दौरा महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए प्रचार की

शुरुआत मानी जा रही है। शिवाजी महाराज ने देश दुनिया को क्या मैसेज दिया। सबसे पहले उन्होंने कहा था देश सबका है। सबको लेकर चलना है। अन्याय नहीं करना है। मगर हम सोचें कि इनकी सोच का आज कौन सा चिह्न है तो वो ये संविधान है। सीधा सा कनेक्शन है। जो शिवाजी महाराज ने कहा था, 21वीं सदी में उसका ट्रांसलेशन संविधान है। उनकी सोच से ही संविधान आया। अगर शिवाजी और शाहूजी महाराज जैसे लोग नहीं होते तो संविधान नहीं होता। आज यहां मूर्ति का अनावरण कर रहे हैं। शिवाजी महाराज की। ये सिर्फ एक मूर्ति नहीं। मूर्ति जब बनाई जाती है जब हम किसी व्यक्ति की विचारधारा को, उनके कर्मों को दिल से समर्थन करते हैं।

# महानगरों से पांच साल में हटेंगी ओवरहेड बिजली लाइन

## भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, उज्जैन शहरों में डाली जाएगी अंडरग्राउंड लाइन

**भोपाल (नप्र)।** प्रदेश के महानगरीय कैटेगरी वाले शहरों भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, सागर, रीवा, उज्जैन में अब पांच साल के भीतर सभी ओवरहेड विद्युत लाइन को अंडरग्राउंड विद्युत लाइन में बदला जाएगा। विद्युत नियामक आयोग

ने इसके नियम बनाकर ऊर्जा विभाग और तीनों ही विद्युत वितरण कंपनियों से इसका पालन करने के लिए कहा है। इसके अलावा प्रदेश के अन्य शहरी इलाकों और घनी बस्तियों, धार्मिक व पर्यटन स्थलों के आस-पास भी अंडरग्राउंड केबल डालकर बिजली सप्लाई की जाएगी।

विद्युत नियामक आयोग द्वारा इसका प्रावधान मध्यप्रदेश विद्युत वितरण संहिता (पुनरीक्षण प्रथम) 2024 में किया गया है। इसके लिए बनाए गए नियमों में कहा गया है कि महानगरीय इलाकों में नए कार्यों के लिए अंडरग्राउंड केबल का ही प्रयोग अब किया जाएगा। वर्तमान ओवरहेड लाइन को एक-एक करके अंडरग्राउंड केबल से बदलने की योजना तैयार की जाएगी। इसका कार्यकाल विद्युत संहिता की अधिसूचना की तारीख से पांच साल से अधिक नहीं होगा। इसके बाद का समय विद्युत नियामक आयोग की सहमति के बाद ही बढ़ेगा। इसके लिए आयोग ने जो व्यवस्था तय की है उसके अनुसार सबसे पहले उन फीडर को अंडरग्राउंड केबल से जोड़ा जाएगा जो अधिक राजस्व उपलब्ध करा रहे हैं। चोरी वाले एरिया में नए पायल प्रोजेक्ट के जरिये यह काम किए जा सकते हैं।

**पर्यटन, धार्मिक स्थल और आपदा संभावित क्षेत्रों में भी अंडरग्राउंड केबल डलेगी-** आयोग द्वारा पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी, पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी और मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी के लिए बनाए गए नियमों में कहा गया है कि शहरी इलाकों में या घनी बस्तियों में तथा पर्यटन और धार्मिक स्थलों के आसपास आने वाले सालों में भूमिगत केबल को प्राथमिकता दी जाएगी।

# ये कोई तय नहीं कर सकता कि भूमिहार कहां जाएंगे

- जेडीयू की राज्य कार्यकारिणी में विधायक ने कह दी बड़ी बात

**पटना (एजेंसी)।** बिहार में साल 2025 में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर तमाम राजनीतिक दलों ने अपनी तैयारी शुरू कर दी है। छोटी-छोटी पार्टियों ने अपने संगठन को मजबूत करने के लिए बैठक बुलानी शुरू कर दी है। इस कड़ी में जेडीयू ने शनिवार को राज्य कार्यकारिणी की बैठक बुलाई। इस बैठक में जेडीयू के सभी विधायक हिस्सा लेने के लिए पहुंचे। बैठक में आगामी विधानसभा चुनाव की रणनीतियों पर गहन चर्चा की गई। बैठक में तय किया गया कि जेडीयू के संगठन को बिहार में मजबूत करना है। बैठक में हिस्सा लेने के लिए जेडीयू विधायक डॉक्टर

संजीव कुमार भी पहुंचे थे। उन्होंने जेडीयू की कार्यकारिणी बैठक के बारे में आईएएनएस से बात की। उन्होंने कहा, बैठक में सिर्फ एक ही एजेंडे पर चर्चा हुई है कि साल 2025 में फिर से नीतिश कुमार की सरकार लानी है। बैठक के दौरान यह तय किया गया है। इसके साथ ही साथ जमीनी स्तर पर जेडीयू के संगठन को मजबूत करने का मंत्र दिया गया है। वहीं पिछले दिनों जेडीयू नेता अशोक चौधरी के द्वारा भूमिहारों पर दिए बयान पर भी जेडीयू नेताओं में आपसी मतभेद देखने को मिला। इस पर जेडीयू विधायक डॉक्टर संजीव कुमार ने कहा, उनके बयान से बिहार की जनता में नाराजगी है, नेता में नाराजगी नहीं है।

# इजराइली सेना ने हिजबुल्लाह के 400 लड़ाके मार गिराए

- सीरिया से संपर्क तोड़ा; बाइडेन बोले-ईरानी परमाणु अड्डे-तेल भंडार पर हमला न करे इजराइल

**तेलअवीव (एजेंसी)।** इजराइली डिफेंस फोर्स ने दक्षिणी लेबनान के बाद अब उत्तरी लेबनान में भी हवाई हमले तेज कर दिए हैं। आईडीएफ ने शनिवार को बताया कि पिछले 5 दिनों में उन्होंने 400 हिजबुल्लाह लड़ाकों को मारा है। इसके अलावा हिजबुल्लाह के 2,000 से ज्यादा सैन्य ठिकानों को तबाह कर दिया गया है। आईडीएफ के मुताबिक लेबनान से 3 लाख लोग सीरिया चले गए हैं। लेबनान सरकार के मुताबिक अब तक 12 लाख से ज्यादा लोगों ने देश छोड़ दिया है। इजराइली हमले बढ़ने के बाद ये आंकड़े बढ़ते जा रहे हैं। इस बीच इजराइल के हवाई हमले में लेबनान को सीरिया से जोड़ने वाला हाईवे टूट गया है। इजराइल ने बेरूत एयरपोर्ट से सिर्फ एक किलोमीटर दूर भी स्ट्राइक की है। इजराइल ने बाइडेन को ये गारंटी देने से इनकार कर दिया कि वह ईरान के

परमाणु ठिकानों पर हमला नहीं करेगा। दरअसल, ईरान ने 1 अक्टूबर को हिजबुल्लाह चीफ नसरल्लाह की मौत का बदला लेने के लिए इजराइल पर हमला किया था। इजराइल ने कहा था कि वह इसका बदला जरूर लेगा। बाइडेन ने शुक्रवार को कहा कि इजराइल ने अभी तक यह तय नहीं किया है कि वह ईरान के हमले का जवाब कैसे देगा।

परिक्रमा

# नक्सलवाद पर करारा प्रहार और फार्म में आते मोहन

अरुण पटेल

*ह्याह्याह्याह्याह्यालेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं।*
*संपर्क-*
*09425010804*
*07999673990*

अक्टूबर और नवम्बर माह में देश के चार राज्यों में जो चुनाव हो रहे हैं उनके नतीजे अपने-अपने ढंग से किसी के ऊपर नकारात्मक और किसी के ऊपर सकारात्मक प्रभाव डालने वाले होंगे। भले ही यह चुनाव राज्यों के हों लेकिन ये प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के बीच चुनावी मुकाबले में तब्दील हो रहे हैं। इसलिए देखने वाली बात यही होगी कि किसका नेतृत्व और चेहरा चमकीला होगा और किसको निराशा की वादियों में भटकना पड़ेगा। गांधी जयंती के दिन मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने गैर-हिंदीभाषी लेकिन हिन्दी की सेवा करने वाले वरिष्ठ पत्रकार, जनसंपर्क से जुड़े अधिकारी को राज्यपाल मंगूभाई पटेल के हाथों प्रतिष्ठित सम्मान से सम्मानित कराया। छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों ने चार अक्टूबर को अबूझमाड़ इलाके में नक्सलवाद पर करारा प्रहार करते हुए 32 नक्सलवादियों को ढेर कर दिया और घटनास्थल से भारी मात्रा में हथियार बरामद किए।

नक्सलवादी घटनाओं और उनके सफाये की दिशा में उठाये जा रहे कदमों की दिशा में जो कार्यवाहियां हुईं उसमें यह इस मायने में खास है कि हमारे सुरक्षा बल के जवानों ने नक्सलियों को उनके रनिंग ट्रेनिंग कैम्प को घेर कर मौत के घाट उतार दिया। पूर्वीय बस्तर डिवीजन को गुरिल्ला वार की ट्रेनिंग दे रहे कमलेश और उर्मिला उर्फ नीति भी मारे गये नक्सलियों में शामिल हैं। सुरक्षा बल के सैनिकों ने इतने गोपनीय ढंग से दो दिन तक इस क्षेत्र की घेराबंदी की कि नक्सलियों को इसकी भनक तक नहीं लगी। कुछ वर्ष पहले तक किसी बाहरी व्यक्ति या वाहन के क्षेत्र में घुसते ही नक्सली सक्रिय हो जाते थे। पहाड़ियों और भारी वर्षा के कारण उफनती नदियों व नालों से घिरा दंतेवाड़ा जिले का थुलथुली गांव मुख्यालय से लगभग 40 किमी दूर है तो नारायणपुर से भी लगभग 60 किमी की दूरी पर है। यहां ऐसा पहली बार हुआ कि जवानों ने नक्सलियों के रनिंग ट्रेनिंग कैम्पों में घुसकर उन्हें मारा है। यदि वर्ष 2024 की बात की जाये 27 मार्च को बीजापुर के चिपुरभट्टी में 6 नक्सली ढेर किये गये थे। दो अप्रैल को बीजापुर के गंगालूर में 13 नक्सली मारे गये तो वहीं 16 अप्रैल को कांकेर में 29 नक्सलियों को ढेर किया गया। 30 अप्रैल को अबूझमाड़ के टेकमेटा में 10 नक्सली मारे गये थे। 10 मई को बीजापुर के पीड़िया में 12 और 23 मई को रेकावाही में आठ नक्सली मारे गये थे। लाल आतंक पर देश में किए जा रहे करारे प्रहार के तहत छत्तीसगढ़ मे जो मुठभेड़ शुक्रवार 4 अक्टूबर को हुई है वह देश की दूसरी सबसे बड़ी मुठभेड़ मानी जा रही है जिसमें 400 जवानों ने चार घंटे तक इस आपरेशन को अंजाम दिया और इसमें 25 लाख रुपये का ईनामी संभागीय इंचार्ज भी मारा गया। मौजूदा मानसून में छत्तीसगढ़ में लगभग 235 नक्सली मार गिराये गये हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि लाल आतंक के खात्मे के लिए इन दिनों प्रभावी कार्रवाई की जा रही है।

## अशोक और रुबी सम्मानित

मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा जिन साहित्यसेवियों और पत्रकारों को सम्मानित किया गया उनमें जनसंपर्क विभाग के वरिष्ठ अधिकारी अशोक मनवानी और हरिभूमि भोपाल की वरिष्ठ पत्रकार रुबी सरकार शामिल हैं। बांग्लाभाषी होने और हिन्दी में ग्रामीणों के संघर्ष और सफलता की यात्रा पुस्तक लेखन के रुप में रुबी को सम्मानित किया गया है, जबकि जनसंपर्क विभाग के वरिष्ठ अधिकारी अशोक मनवाणी बहुमुखी प्रतिभा के धनी और मिलनसार अधिकारी हैं। मध्यप्रदेश के राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने इस अवसर पर कहा कि विश्व में हिंदी की स्वीकार्यता तेजी से बढ़ रही है और यदि कोई भारतीय विदेश में अपनी बात हिंदी में कहता है तो उसे बड़े ध्यान से सुना जाता है। हिंदी को यह सम्मान दिलाने में हमारे साहित्यकारों, कलाकारों, पत्रकारों और हिंदीसेवियों का बड़ा हाथ है। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा हर वर्ष गांधी जयंती पर अहिंदीभाषी विभूतियों को सम्मानित किया जाता है जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी को बढ़ावा देने में महती भूमिका निभायी। इस समारोह में ऐसी नौ विभूतियों के साथ ही साहित्य, शिक्षा और कला से जुडी 21 प्रतिभाओं को भी सम्मानित किया गया।

## गुजरात मॉडल अपनाते मोहन यादव

मध्यप्रदेश में लोगों की समस्याओं को सुनने के लिए मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव गुजरात मॉडल अपनाने जा रहे हैं और उन्होंने अधिकारियों को दो-टूक शब्दों में कहा है कि सीएम हेल्प लाइन आम जनता के कल्याण के लिए प्रभावी और महत्वपूर्ण मंच है तथा इस सेवा से जुड़े अच्छा काम करने वालों को प्रोत्साहित किया जायेगा और सेवा का दुरुपयोग करने वालों को चिन्हित किया जायेगा ताकि वे इसका दुरुपयोग न करें। मध्यप्रदेश जल्द ही जन-शिकायतों के त्वरित व संतोषजनक तरीके से समाधान करने के लिए गुजरात मॉडल अपनायेगा। अफसरों के दल ने गुजरात मॉडल का अध्ययन किया है। यह जानकारी मुख्यमंत्री यादव को लोकसेवा प्रबंधन मामलों की समीक्षा बैठक में लोकसेवा प्रबंधन विभाग के प्रमुख सचिव राघवेंद्र सिंह ने दी। मुख्यमंत्री यादव ने इस बात पर जोर दिया कि सीएम हेल्प लाइन की शिकायतें पूरी गंभीरता से सुनी जायें और कहीं भी किसी भी स्तर पर कोई लापरवाही न हो। राघवेन्द्र सिंह का कहना था कि विभागों के कामकाज से हजारों लोग खफा हैं। एक ही दिन में 60 हजार लोग सीएम हेल्प लाइन पर विभागों की कमियां गिना रहे हैं। इस बैठक में यह भी जानकारी दी गयी कि कुछ लोग एक ही दिन में एक से अधिक शिकायतें करते हैं। इसकी रोकथाम के लिए हेल्प लाइन पोर्टल में एक दिन में एक व्यक्ति द्वारा पांच शिकायतें करने पर उसे उस दिन के लिए ब्लाक करने पर विचार किया जा रहा है। सतपुड़ा और विंध्याचल भवन का नवीनीकरण होगा और इनके स्थान पर नये भवन बनाने का प्रस्ताव मुख्यमंत्री यादव ने यह कहते हुए लौटा दिया है कि दोनों भवनों को संरक्षित करते हुए वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरुप भवनों के निर्माण के उद्देश से समग्रता में योजना तैयार की जाये, अरेरा हिल्स शहर शहर के बीचों बीच है इसलिए इसे एक प्रशासनिक जोन बनाया जाये। मुख्यमंत्री ने इस बात पर भी जोर दिया कि मेट्रो परियोजना क्षेत्र के व्यावसायिक उपयोग के बारे में विचार किया जाये। इंदौर की ईस्टर्न बायपास परियोजना का क्रियान्वयन क्षेत्रीय निवासियों को विश्वास में लेकर किया जाये।

## और यह भी

तिरुपति के लड्डुओं के प्रसाद में पशु चर्बी की मिलावट वाले घी के इस्तेमाल के आरोपों से करोड़ों भक्तों की भावनायें प्रभावित होने के मद्देनजर उन्हें संतुष्ट करने के लिए पांच सदस्यीय स्वतंत्र विशेष जांच दल एसआईटी का गठन सुप्रीम कोर्ट ने किया है। इसमें दो अधिकारी सीबीआई के, दो अधिकारी आंध्रप्रदेश पुलिस के और एक वरिष्ठ अधिकारी फूड एवं सेफ्टी स्टेंडर्ड अथारिटी आफ इंडिया का होगा। यह एसआईटी सीबीआई निदेशक की निगरानी में काम करेगी। इस मामले में विवाद तब खड़ा हुआ था जब मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने 18 सितम्बर को मीडिया में बयान दिया कि तिरुपति के प्रसाद के लड्डुओं में चर्बी वाले मिलावटी घी का इस्तेमाल हुआ है। उन्होंने इस मामले में लैब की जांच रिपोर्ट सार्वजनिक की थी।

# पैगंबर मोहम्मद पर टिप्पणी का म.प्र.में विरोध

- यति नरसिंहानंद की शिकायत; कांग्रेस विधायक मसूद बोले- जांच हो तो बीजेपी का षडयंत्र सामने आएगा

**भोपाल (नप्र)।** उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद के पैगंबर मोहम्मद पर दिए बयान का मध्यप्रदेश में भी विरोध हो रहा है। भोपाल मध्य विधानसभा से कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद मुस्लिम समाज के लोगों के साथ भोपाल

पुलिस कमिश्नर हरिनारायण चारी मिश्रा को ज्ञापन देने पहुंचे। पुलिस कमिश्नर को ज्ञापन देने के बाद विधायक आरिफ मसूद ने कहा- हमारे नबी के बारे में बार-बार प्रायोजित ढंग से नफरत फैलाने का काम किया जा रहा है। जहां तक मैं समझता हूं कि ये किया नहीं जा रहा बल्कि कराया जा रहा है। पहले महाराष्ट्र से एक ने बोला अब गाजियाबाद में बोला गया। उसका फायदा ये ऐसे उठाते हैं कि एकाध मुकदमा छोटी सी धाराओं में दर्ज होने के बाद उनको फ्रीडम दिया जाता है। कोई गिरफ्तारियां नहीं होती है।

## ऐसे लोगों पर सख्त कार्रवाई नहीं होती

मसूद ने कहा- सख्त एक्शन नहीं होता तो दोबारा उनकी हिम्मत बढ़ती है और वो इस तरह का प्रचार करते हैं। ऐसे वक्त में जब नवरात्रि का पर्व चल रहा है। जिसमें सभी की आस्था है, सब लोग उनको मानते हैं। तो ऐसे में एक समाज को इस तरह प्रोवोग करना कि कोई ना कोई इस तरह का अप्रिय बयान दें या कोई अप्रिय कृत्य करें, जिससे घटनाएं घटित हों। तो ये प्रायोजित है।

## इस मामले में एक्शन होना चाहिएः मसूद

मसूद ने बताया कि मैंने पुलिस कमिश्नर से कहा है कि इस मामले में मुकदमा दर्ज होना चाहिए तो उन्होंने (पुलिस कमिश्नर) बताया कि एक मुकदमा दर्ज हो चुका है। लॉ के हिसाब से एक मुकदमा दर्ज होने के बाद दूसरा दर्ज होने में प्रॉब्लम है। हमने उन्हें बताया कि प्रॉब्लम इसलिए नहीं होना चाहिए कि इसमें एक कारण दूसरा है कि एक व्यक्ति लगातार इस तरह के प्रयोग कर रहा है कि कोई रिएक्शन करे। इस मामले में एक्शन होना चाहिए। सीपी साहब ने जांच कराकर कार्रवाई का भरोसा दिया है। इस तरह के लोगों से बचें। ऐसे व्यक्ति को सख्त सजा मिलनी चाहिए।

**जांच हो तो बीजेपी का षड्यंत्र निकल आएगा-** मसूद ने कहा- भाजपा नफरत फैलाने में माहिर है। अगर सही से जांच होगी तो इनका पूरा षड्यंत्र निकल आएगा। ऐसे समय पर क्यों कराया जा रहा है। हमने तो आज तक ये देखा कि कोई पीर हों, वली हों, चाहे संत हों इनके प्रवचन जब भी सुने तो वे शांति सद्भाव, प्रेम भाव और प्रेरणा के प्रवचन सुने, कोई संत मौलाना ये नहीं कहता कि दूसरे का बुरा करो। कोई अगर दूसरे के मजहब के बारे में इस तरह की टिप्पणी करता है तो मैं नहीं समझता कि वो संत है।

## राज्यपाल श्री पटेल ने प्रो. अर्पण भारद्वाज को विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन का कुलगुरू नियुक्त किया

**भोपाल(नप्र)।** राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री मंगुभाई पटेल ने विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलगुरू के पद पर प्रो. अर्पण भारद्वाज को नियुक्त किया है। प्रो. भारद्वाज वर्तमान में माधव-विज्ञान महाविद्यालय उज्जैन में प्रभारी प्रचार्य हैं। इनका कार्यकाल कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से चार वर्ष की कालावधि अथवा 70 वर्ष की आयु (जो भी पूर्वतर हो) तक होगा।

# धार में आदिवासी छात्रों की मौत; विभाग का बड़ा फैसला

**हॉस्टल की टंकी में करंट लगने से हुई थी मौत; अब मेंटेनेंस और नए निर्माण डिपार्टमेंट खुद करेगा**

**भोपाल (नप्र)।** धार के जनजातीय छात्रावास में दो छात्रों के शव पानी की टंकी में मिलने के बाद जनजातीय कार्य विभाग ने बड़ा फैसला लिया है। अब नए निर्माण, मेंटेनेंस और रिपेयरिंग से जुड़े काम पीडब्ल्यूडी, आरईएस, हाउसिंग बोर्ड, पीआईयू जैसी संस्थाओं के बजाए जनजातीय कार्य विभाग खुद करेगा। इसके लिए विभाग खुद की टेक्निकल विंग भी बनाएगा।

दरअसल, बुधवार 25 सितंबर को धार के जनजातीय छात्रावास में पानी की टंकी में 2 छात्रों की मौत हो गई थी। शुरुआती जांच में पता चला था कि छात्रों को टंकी में करंट लगा और उनकी मौत हुई है। इलेक्ट्रिक सेफ्टी में हुई चूक के बाद हॉस्टल्स में मेंटेनेंस को लेकर सवाल उठ रहे हैं।

## रिपेयरिंग और नए निर्माण में नहीं होगी देरी

जनजातीय कार्य मंत्री कुंवर विजय शाह ने बताया विभाग में अब टेक्निकल अमला कैबिनेट से मंजूर हो गया है। इससे निर्माण कार्य समय पर हो सकेंगे। पीडब्ल्यूडी, आरईएस, हाउसिंग बोर्ड जैसी एजेंसियों पर निर्भरता कम होगी। विभाग की बिल्डिंग का निर्माण ठीक क्वालिटी का हो सकेगा। मॉनिटरिंग और जवाबदारी भी तय हो सकेगी। अभी रिपेयरिंग के काम के लिए भी पीडब्ल्यूडी के भरोसे रहना पड़ता है।

विकास



आकाश

**धार जैसी घटनाएं रोकने निगरानी करेगा तकनीकी अमला-** विभागीय अधिकारियों के मुताबिक धार के छात्रावास में पानी की टंकी में दो छात्रों की डूबने से मौत हुई। ऐसी घटनाएं ना हों इसके लिए सभी काम समय पर होंगे। हर जिले में एक इंजीनियर, एसडीओ होंगे, जो निर्माण कार्य रिपेयरिंग और मेंटेनेंस की निगरानी करेंगे।

**50 करोड तक के काम करा पाएगा विभाग-** एक हजार करोड़ की बिल्डिंग वर्क दूसरे विभाग के भरोसे होते थे अब बंद होंगे। टेक्निकल विंग अब अपने विभाग से ही 50 करोड़ की बिल्डिंग के टेंडर करवाकर काम करा पाएगा। कई जगहों पर पीआईयू द्वारा बनाई गई कई बिल्डिंग की क्वालिटी बहुत खराब है।

## काम में देरी की वजह से हर साल विभाग को सौ करोड़ का घाटा

विभागीय अफसरों की माने तो कई काम ऐसे होते हैं जो दूसरे विभागों की निर्माण एजेंसियों के जिम्मे होते हैं, वे कई साल गुजरने के बाद भी पूरे नहीं हो पाते। एक्स्ट्रा पैसे देकर हर साल करीब 100 करोड़ से ज्यादा का फंड देना पड़ता है। ऐसे में निर्माण और रिपेयरिंग वर्क में विभाग को सौ करोड़ का नुकसान होता है।

# भोपाल शहर काजी ने पुलिस कमिश्नर से की शिकायत

**कहा- स्वामी नरसिंहानंद का भाषण नफरत भरा, धार्मिक सांप्रदायिक सौहार्द्र बिगाड़ने का प्रयास किया**

**भोपाल (नप्र)।** जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी यति नरसिंहानंद के पैगंबर मोहम्मद पर दिए बयान के खिलाफ भोपाल शहर काजी मुश्ताक अली नदवी ने शिकायत की है। शनिवार दोपहर उन्होंने पुलिस कमिश्नर हरिनारायण चारी मिश्रा से मुलाकात की। कहा- हाल ही में एक कथित वीडियो प्रसारित किया गया है। जिसमें पैगंबर मोहम्मद और कुरआन के प्रति आपत्तिजनक और भड़काऊ टिप्पणी की है। इससे मुस्लिम समुदाय की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंची है।

शहर काजी ने अपनी शिकायत में कहा कि यति नरसिंहानंद ने अपने भाषण में न केवल पैगंबर मोहम्मद साहब के खिलाफ अनर्गल बातें कहीं, बल्कि हिंदू परंपरा के अनुसार रावण दहन की प्रथा को बदलने की बात की। उन्होंने अपने कथनों से समाज में धार्मिक उन्माद फैलाने का प्रयास किया है। यह भाषण नफरत से भरा हुआ है, जो न केवल सांप्रदायिक सौहार्द्र को बिगाड़ने का प्रयास है, बल्कि इससे समाज में हिंसा और अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यह मामला अत्यधिक संवेदनशील है।

यह बयान उस समय आया है जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अरब देशों के साथ मधुर संबंध स्थापित करने की नीति ने भारत की वैश्विक छवि को मजबूती दी है। इस तरह के भड़काऊ बयान न केवल भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि को धूमिल करने का प्रयास है, बल्कि यह प्रधानमंत्री की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाने के साथ विश्व स्तर पर भारत की साख को कमजोर करने की कोशिश है।

उक्त भाषण से देश की सांप्रदायिक एकता और शांति को खतरा हो सकता है, और इससे विभिन्न समुदायों के बीच दंगा फैलने की संभावना बढ़ गई है। इस प्रकार के भाषण न केवल संविधान में दिए गए नागरिक अधिकारों का उल्लंघन करते हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता को खतरे में डालने की एक सोची-समझी चाल हो सकती है। उन्होंने स्वामी यति नरसिंहानंद सरस्वती की गिरफ्तारी की मांग की।

# राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल भजन संध्या संत वाणी कार्यक्रम में हुए शामिल

- बंदिश, भाषा और भौगोलिक सीमाओं से परे भजनों की राजभवन में हुई प्रस्तुति ● राज्यपाल ने गांधी जयंती पर स्वच्छता सेवियों का किया सम्मान

**भोपाल(नप्र)।** राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल गांधी जयंती पर आयोजित भजन संध्या संत वाणी में शामिल हुए। राजभवन के उत्कृष्ट सफाई मित्रों और भोपाल के स्वच्छता सेवियों को सम्मानित किया। राजभवन के सांदीपनि सभागार आयोजित भजन संध्या में गायन की बंदिश, भाषा के बंधन और भौगोलिक सीमाओं से परे भजनों की प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर संस्कृति राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार श्री धर्मेंद्र सिंह लोधी, राज्यपाल के प्रमुख सचिव श्री मुकेश चन्द गुप्ता, राज्यपाल के अपर सचिव श्री उमाशंकर भार्गव, राजभवन के अधिकारी-कर्मचारी सहित बड़ी संख्या मे भक्त श्रोतागण उपस्थित थे।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने राजभवन की हेड जमादार श्रीमती रूमा बाई, सफाई कर्मचारी श्री मूलचंद बसोड़ और एजेन्सी सफाई कर्मचारी श्री महेश बिछौले को पदक, प्रमाण पत्र और स्वच्छता किट प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर भोपाल नगर के स्वच्छता सहयोगी अशासकीय संस्थाओं के संस्थापकों को भी सम्मानित किया। सम्मानित होने वालों में स्वच्छता किटी ग्रुप भोपाल की को-फाउंडर सुश्री रूचिका सचदेव और सकारात्मक सोच स्वच्छ भारत संगठन की को-फाउंडर सुश्री अनिता शर्मा शामिल हैं।

संत वाणी कार्यक्रम के दूसरे सत्र में मुख्य गायक कलाकार श्री राजीव सिंह ने श्री अमन मलक एवं श्री

रोहित कुमार वानखेड़े के साथ अपनी उत्सव प्रधान गायकी की विशिष्ट शैली में भजनों का गायन किया। संत साहित्य से आई हुई संगीत की पारंपरिक विधा के निर्गुण भजन, सूफी कलाम और कृष्ण भक्ति के भजनों और गीतों की प्रस्तुति दी। उन्होंने सबसे पहले राजस्थानी शैली में इंग्लिश नरेशन के साथ 'वंदे मातरम्' गीत की अनूठी प्रस्तुति दी। उत्सवी उल्लास के साथ श्री कृष्ण भजन 'सांसों की माला तोहरे नाम' से श्रोताओं को भक्ति के उल्लास में तरंगित कर दिया। संत कबीर के भजन 'कबीरा खड़ा बाजार में, मांगे सबकी खैर, ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर' को जोशीले अंदाज में प्रस्तुत किया। पद्मविभूषण सम्मानित भूपेन हजारिका के गीत 'गंगा बहती क्यों हो' के द्वारा श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। सभागार में दक्षिण भारत के कृष्ण भक्त नवाब सादिक की रचना 'कन्हैया याद है, कुछ भी हमारी' की सुरीली स्वर लहरी से भक्ति की बयार बहा दी। प्रसिद्ध शायर नज़ीर अकबराबादी की नज्म आदमीनामा के चुनिंदा शेरों को अपनी विशिष्ट गायन शैली में प्रस्तुत किया। अमृतसर के कृष्ण भक्त अथोनी के पंजाबी भजन 'कृष्णा तेरी मुरली ते भला कौन नही नाचदा, धरती चन सितारे नाच्दे, सारे भगत प्यारे नाच्दे' के द्वारा भजन संध्या के श्रोताओं को कृष्ण भक्ति में मगन कर दिया। संत वाणी की अंतिम प्रस्तुति में श्री राजीव सिंह ने अमीर खुसरो के कलाम 'काहे को ब्याहे बिदेस, अरे, लखिय बाबुल मोरे' की सुमधुर प्रस्तुति से सभी श्रोताओं का मन मोह लिया।

भजन संध्या संत वाणी के प्रथम सत्र में रूपाली चटर्जी, तलत हसन, शिखा यादव, शिखा बामने, मौसमी साहा, गीतिका लाहोट और अंजना भाटिया महिला समूह द्वारा भजनों का गायन किया गया। भजन संध्या का आरंभ महिला समूह की प्रस्तुति 'वैष्णव जन तेने कहिए' भजन से हुआ। इसके बाद फिल्म जागृति के गीत 'दे दी हमें आज़ादी हमें बिना खड्ग बिना ढाल साबर मति के संत तूने कर दिया कमाल' का सामूहिक गायन किया। समूह की तीसरी और अंतिम प्रस्तुति संत कबीर के प्रसिद्ध भजन 'चदरिया झीनी-झीनी' सहित गीतों की प्रस्तुतियों ने संत वाणी कार्यक्रम को भक्ति भावों में भिगो दिया।

भजन संध्या में गायक कलाकारों का वाद्ययंत्रों से संगत करने वालों में हनीफ हुसैन सारंगी, आरिफ खाँ बैंजो, आमिर खाँ तबले, प्रशांत श्रीवास्तव ढोलक, इकबाल खाँ ऑक्टोपैड और सुश्री आरती ढोलक पर शामिल थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में संचालक संस्कृति विभाग श्री एन.पी. नामदेव ने स्वागत उद्बोधन दिया। आभार प्रदर्शन नियंत्रक हाउस होल्ड श्रीमती शिल्पी दिवाकर ने किया।

पुस्तक समीक्षा

**सुदर्शन व्यास**
समीक्षक



# लोगों का काम है कहना: पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का दस्तावेज

लोगों का काम है कहना...' पुस्तक का आखिरी पन्ना पलटते समय संयोग से महात्मा गांधी का एक ध्येय वाक्य मनङ्मस्तिष्क में गूंज उठा - 'कर्म ही पूजा है'। जब मैं इस किताब को पढ़ रहा था तो बार-बार महात्मा गांधी का ये वाक्य सहसा अंतर्गन में सफर कर रहा था। ये कहूँ तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि बापू के इस विचार को चरितार्थ उस शख्सियत ने किया है जिनके जीवनवृत्त पर ये पुस्तक लिखी गई है। प्रो. (डॉ) संजय द्विवेदी भारतीय मीडिया जगत में सुपरिचित और सुविख्यात नाम हैं। वरिष्ठ पत्रकार और मीडियाकर्मियों के लिए ये नाम इसलिए जाना-पहचाना है क्योंकि संजय जी अनथक मीडिया के विभिन्न आयामों के जरिये सक्रिय रहते हैं। पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए यह नाम बड़े आदर से लिया जाता है। उल्लेखनीय है कि पत्रकारिता के विद्यार्थी संजय जी को मीडिया गुरु कहना ज्यादा पसंद करते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मैंने देखा है कि माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के कुलसचिव तथा प्रभारी कुलपति की जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए भी विद्यार्थियों को बतौर शिक्षक पढ़ाना उनकी दैनंदिनी रही थी। इसीलिए प्रो. (डॉ) संजय द्विवेदी देशभर में पत्रकारिता के कुनबे की हर पीढ़ी में एक पत्रकार, एक शिक्षक, एक लेखक, एक विश्लेषक, एक विचारक और मीडिया गुरू के रूप में सम्मान के साथ याद किये जाते हैं।

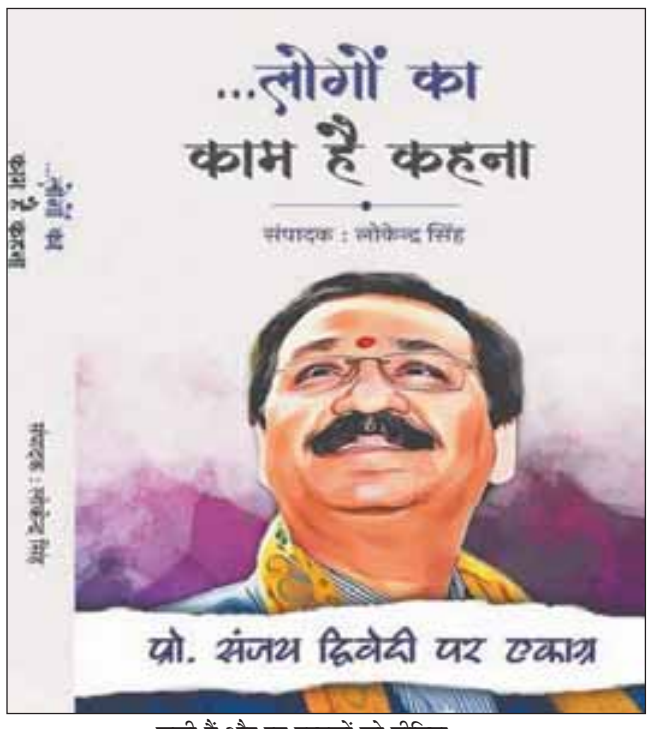

प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी पर एकाग्र पुस्तक 'लोगों का काम है कहना...' उनके व्यक्तित्व के साथ ही कृतित्व पर मूलतः आधारित है। पुस्तक में देश के 14 मूर्धन्य विद्वानों द्वारा द्विवेदी जी के विचारों, उनके लेखकीय और प्रशासकीय यात्रा का जिस तरह से वर्णन किया है, इससे यह स्पष्ट होता है कि अपने जीवन का एक-एक क्षण पत्रकारिता और लेखन को समर्पित कर देना संजय जी का मानो एकमात्र लक्ष्य हो। वैसे, प्रो. द्विवेदी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आधारित यह पहली पुस्तक नहीं है। इससे पहले 'कुछ तो लोग कहेंगे', 'संजय द्विवेदी का सृजन संसार' और 'जो कहूंगा सच कहूंगा' प्रकाशित हो




चुकी हैं और इन पुस्तकों को मीडिया के मोहल्ले में खूब सराहा भी गया। '...लोगों का काम है कहना' शीर्षक अपने आप में प्रो. द्विवेदी के विचारों को सु-स्पष्ट करता है। मैं पुस्तक के संपादक लोकेन्द्र सिंह को बधाई दूंगा कि उन्होंने यह शीर्षक चुना। यह शीर्षक ही अपनेआप में एक बड़ा अध्याय या कहूं कि किताब की तरह है, जो कि प्रो. द्विवेदी के जीवनवृत्त को उजागर करता है। प्रो. द्विवेदी के व्यक्तित्व से स्पष्ट झलकता है कि वे अपने काम में सदैव मगन होकर, व्यर्थ में एक क्षण गवाएँ बिना अपने लेखन कार्य के माध्यम से देश तथा समाजहित में सदैव कार्यरत रहते हैं। 'कुछ तो लोग कहेंगे या लोगों का काम है कहना' - ये विचार आदरेय संजय जी का जीवन दर्शन है, क्योंकि ये कहने की जिम्मेदारी उन्होंने लोगों को देकर रखी है। यही कारण भी है कि वे डेढ़ दशक से अधिक समय पत्रकारिता में सक्रिय रहे। राजनीतिक और मीडिया संदर्भों पर अबतक लगभग 3 हजार से अधिक आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में 18 वर्षों से अधिक का अनुभव तथा माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में प्रभारी कुलपति, कुलसचिव तथा दस वर्षों तक जनसंचार विभाग के अध्यक्ष की जिम्मेदारी को कुशलतापूर्वक निभाया। इसके साथ ही भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक रहे। अबतक विभिन्न विषयों पर 11 पुस्तक प्रकाशन एवं 21 पुस्तकों का संपादन तथा उनके व्यक्तित्व पर 4 पुस्तकों का प्रकाशन उनकी पत्रकारिता की सतत् जारी साधना के फलसफें बयां कर रही है। कुल 156 पृष्ठों की यह पुस्तक प्रो. संजय द्विवेदी जी के जीवनवृत्त के जरिये पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए पठनीय, प्रेरणा के दस्तावेज की तरह है। पत्रकारिता के सशक्त हस्ताक्षर के रूप में प्रो. द्विवेदी जी की अक्षर साधना अनवरत रहे तथा वे पत्रकारिता की नवपौध के प्रेरणापुरुष रहें, यही कामना है। शेष ...लोगों का काम है कहना।

**पुस्तक - ...लोगों का काम है कहना**
**संपादक- लोकेन्द्र सिंह**
**प्रकाशक- यश पब्लिकेशंस, नई दिल्ली**
**मूल्य- 350/-**

(लघुकथा)

## सिगरेट के धुंए

**प्रभुनाथ शुक्ल**

आसमान में काले घने बादल छाए थे। मौसम नम था और हवा तेज चल रही थी।

गड़गड़ाहट के साथ चमकती बिजली बादलों को बार -बार चीर रही थी। नेशनल हाईवे

पर गाड़ी अपनी लय में जा रही थी। पहड़ियों के बीच का यह दृश्य बहुत अच्छा

लग रहा था। सफ़र में शाम की चाय का वक्त गया था। दोस्त ने गाड़ी को उस

ढाबे की तरफ मोड़ दिया।

वेलकॉम सर ! आइए स्वागत है

क्या लेंगे...?

ज्यादा कुछ नहीं, बस दो प्लेट पनीर पकौडे और दो चाय

तभी ढाबे पर तीन रेसलिंग बाइक से सात -आठ की तादात में किशोर पहुँचते

हैं। वे सभी ढाबे के एक कोने में बैठते हैं। सभी कानो में ईयर फोन लगा

रखें हैं और हाथ में महंगी मोबाइल है।

एक ने ढाबे के नौकर छोटू को पुकारा

जी भईया आया

जी ! क्या चाहिए

आठ आमलेट, दो अंग्रेजी व्हीस्की और दो पैक सिगरेट जल्दी ला

उनका आर्डर उनकी टेबल पर पहुँच गया था। सभी मस्ती में डूब थे। किसी फिल्मी गाने पर सभी झूमने लगे थे। अपने हाथ को बार -बार बालों में लगा रहे थे। कुछ देर बाद सिगरेट के छल्ले उड़ने लगे थे। थोड़ी देर बाद वे नशे में एक -दूसरे की माँ -बहन तक पहुँच गए थे। एक दूसरे का हाथ गिरेबान तक पहुँच गया था। ढाबे पर मौजूद लोगों का सारा ध्यान अब उनकी तरफ था।

हमारी गाड़ी फिर अपने सफ़र पर निकल पड़ी थी। लेकिन, बिगडैल औलादों की यह हरकतें हम दोनों दोस्तों को डराने लगी थीं। क्योंकि इनमें अब हमारे बच्चे नजर आने लगे थे।

(लघुकथा)

## जूस

**सुरेश सौरभ**

क्या बात मैडम जी! आज लेट कर दिया?-क्लर्क

जरा तबीयत न ठीक थी-मैडम

अरे! क्या हुआ आपको ?- क्लर्क

ओह! अब आईं, क्या हुआ मैडम जी?-साहब

सर! तबीयत न ठीक थी, इसलिए आज लेट हो गई।

क्या हुआ ? -साहब

मैडम खामोशी से अपनी सीट की ओर बढ़ गईं।

रामू मैडम ने चपरासी रामू को आवाज दी।

जी जी ! मैम रामू आ गया।

जरा एक गिलास अनार का जूस ले आओ, कुछ तबीयत



ठीक नहीं, वहीं से

लाना जहाँ से लाते हो?

क्लर्क की डेस्कटॉप से आंखें हटीं, कीपैड पर नाचती उंगलियाँ ठहरीं।अब उसकी निगाह रामू पर थीं। रामू उन्हें देख मुस्कुराया, तब हल्की हंसी में क्लर्क बोला-जाओ यार! ले आओ जल्दी!

अभी जाता हूँ सर।- मैम से पैसे लेकर रामू शरारती मुस्कान लिए आगे बढ़ गया। मैडम ने कनखियों से उसे देखा, फिर दुरदुराते हुए उनकी उंगलियाँ कीपैड पर तेज से, तेजतर हो गईं। डेस्कटॉप थरथराने लगा।

कविता
**सुधीर कुमार सोनी**

## कुछ बचा रहे

कितना भ्रम पैदा करता है
यह सवाल
कि जंगल बचाना है
पहाड़ बचाना है
नदियाँ बचाना है
संस्कृति/परम्परा बचाना है
व्यवस्था का गाना है
जो सिर्फ गाया जाना है ।

कुछ लोग
जो करते थे
कहते नहीं थे
उस मुहिम में
मैं भी शामिल हुआ
और जाना
कि क्या-क्या है
जो अपने स्वयं को बचाने में व्यस्त है ।

नदियाँ
अपनी निर्मलता
पवित्रता को बचाने में व्यस्त है ।

धरती व्यस्त है
अपनी हरियाली
और उपजाऊपन को बचाने में ।

सागर अपनी विशालता
और
गुणों को बचाने में व्यस्त है ।

आसमान
परीक्षणों से लगातार जूझ रहा है
दूषित हवाएं उसके सीने में लदी हैं
अपने नीलेपन को बचाने में
आसमान लाल-पीला हुआ जा रहा है ।

पहाड़
अपनी चुप्पी
सख्त मिजाज
और खुरदुरापन को बचाने में व्यस्त है ।

बकरी के झुण्ड
ढूंढ आये हैं
कुछ ठीये पत्तों के
जो अपनी ताजगी
और हरेपन के साथ मौजूद है
अपने कल को बचाने के लिए ।

विनती है ईश्वर
कि बचा रहे
थोड़ा सा शुद्ध जल
किसी कुएँ
तालाब
पोखर में ।

बचा रहे
हमारे बुढ़ापे के समय में
घुटनों में पानी ।

नौजवानों में बचा रहे
आँखों में पानी ।

हवा इतनी भी बची रहे
कि रंग-बिरंगे पतंग उड़ ढ्ढस्त्रश्द्य
आकाश में ।

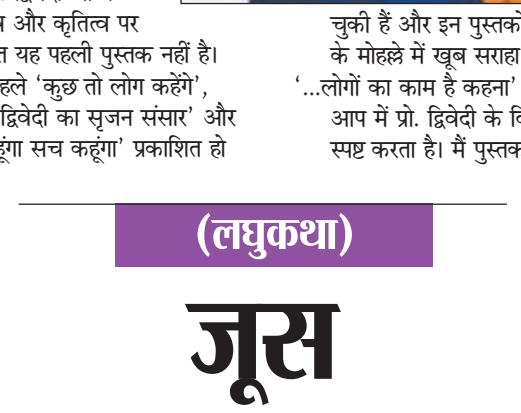

इतनी उमंग बच्चों के मन में बची रहे
कि तितली के पीछे दौड़ सकें
उड़ते पंछी को निहारें ।

इतनी सदाशयता
अपनापन बचा रहे
कि बचे हुए समय में
किसी की स्मृति बची रहे ।

बची रहे कोशिश

इतनी भी
कि कुछ भी जो अपने न होने के कगार पर हो
उसे बचाया जा सके ।

व्यंग
**सुरेश रायकवार**



## गरमा-गरम चुनावी जलेबी

जलेबी हमारे देश की राष्ट्रीय मिठाई है। देश में शायद ही कोई अभागा या दुर्भाग्यशाली होगा जिसने जलेबी का स्वाद नहीं चखा हो। पूरब से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक अमीर-गरीब, ऊंचा-नीचा, बच्चा-बूढ़ा सभी जलेबी खाते है। जलेबी एक सदाबहार मिठाई है इसे आप सुबह शाम दोपहर अथवा रात में किसी-भी समय खा सकते है। इसी प्रकार जन्मदिन की पार्टी हो या विवाह की या फिर मृत्यभोज ही क्यों ना हो जलेबी सब जगह मिलेगी। देश में कहीं पोहा-जलेबी खाया जाता है तो कहीं खमण-जलेबी, कहीं दूध-जलेबी तो कहीं दही-जलेबी। किसी को मावे की जलेबी पसंद है तो किसी को केशरिया, कोई बारीक खस्ता पसंद करता है तो कोई मोटी-मोटी गरम-गरम किन्तु जलेबी प्रायः सभी खाते हैं।

जलेबी के इतिहास की बात करें तो कहा जाता है कि जलेबी की खोज ईरान में हुई थी और आज से लगभग पाँच सौ वर्ष पहले तुर्कियों के आक्रमण के साथ-साथ ही जलेबी भारत पहुंची थी। यद्यपि जलेबी हमारी संस्कृति में रच-बस कर राष्ट्रीय मिठाई अवश्य बन गई किन्तु उसे वह सम्मान प्राप्त नहीं होता जो काजू-कतली या अन्य ड्राइफ्रूट्स वाली मिठाइयों को मिलता है। यहाँ उसकी स्थिति हमारी हिन्दी ही जैसी है, जिसे राष्ट्रभाषा होने का गौरव तो प्राप्त है किन्तु वह मान-सम्मान नहीं मिलता जो अँग्रेजी भाषा को मिलता है। जलेबी को इस बात की तसल्ली अवश्य है कि उसे अग्रेंज़ी में स्वीटमीट, राउंडेड स्वीट अथवा फनल केक आदि नामों से पुकारा जाता है, वरना प्राचीन हिन्दी नाम कुंडलिका तो कोई जानता ही नहीं है।

आजादी के बाद हमारे देश के चुनाव में हमारी जर्जर शिक्षा-व्यवस्था, चिकित्सा-व्यवस्था या मूलभूत सुविधाओं के विकास के मूल मुददे भले ही नजर ना आए हों,लेकिन इन चुनावों में कभी आलू तो कभी प्याज,कभी तेल तो कभी शक्कर कोमुद्दे बनते हुए अवश्य देखा गया है। जलेबी के लिए यह अत्यंत गर्व का विषय है कि हरियाणा के विधानसभा चुनाव में उसे डेब्यू या पदार्पण का मौका दिया गया है।



जलेबी को शायद उसके स्वाद का असली जौहरी अब मिला है क्योंकि जलेबी के जन्म के बाद आज पहली बार उसके स्वाद को समझा गया और उसे इतना सम्मान मिला है। यद्यपि इन स्वादकार नेताजी के दादे-परदादों ने भी जलेबी तो खूब खाई है तथापि उन्हे कभी लगा ही नहीं कि हरियाणवी जलेबी का स्वाद इतना अनोखा है, अतुलनीय, अप्रतिम और अद्भुत है। इस चुनावी सभा के बाद तो अब जलेबी भी सोच रही है कि काश यह स्वाद का जौहरी आज से पचास-साठ वर्ष पहले ही मिल गया होता तो उसे अब तक तो विदेशों में क्या, पूरे ब्रह्मांड में प्रसिद्धि मिल चुकी होती, विश्वभर में पिज्जा-बर्गर के समान ही उसकी भी मांग होती।

वैसे इसके पूर्व जलेबी के स्वाद को 1990 के दशक में सबसे पहले एक विज्ञापन कंपनी ने समझा था। इस विज्ञापन मे बताया गया था कि जलेबी के लालच में घर छोडकर आया एक बच्चा वापस घर पहुँच जाता है और यही वो विज्ञापन था जिसके कारण एक रिफाइंड ऑयल कंपनी देश की सबसे बड़ी खाद्य तेल ब्रांड बन गई थी। किन्तु तब भी जलेबी या जलेबी बनाने वालों की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं देखा गया था।

कहने को तो अंग्रेजों ने हमारे देश पर तीन सौ साल राज किया, मुगलों की सल्तनत भी एक हजार साल रही किन्तु इनमें से किसी को जलेबी में कोई स्कोप नजर नहीं आया। मगर इसमें उनका भी क्या दोष है,वो कहते हैं ना, बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद। आज पहली बार किसी नेता को जलेबी में स्कोप नजर आया है और स्कोप भी ऐसा कि जलेबी बनानेवाला देखते-देखते इतनी बड़ी फेक्टरी का मालिक हो गया कि उसके कारखाने में पचास हजार मजदूर काम करने लगे। देश में ऐसी दस-बीस फेक्टरी भी आरंभ हो गई तब देश से बेरोजगारी तो ऐसे गायब हो जाएगी जैसे गधे के सिर सींग।

हरियाणा के चुनाव में जब देश के एक निहायत बड़े नेता ने सार्वजनिक मंच से बातों की जलेबी छानते हुए जलेबी के स्वाद के कसीदे पढे तो उनके विरोधी कह रहे है कि तेल की जलेबी मुवा दूर से दिखाये किन्तु वे नहीं जानते है कि उनकी ये बातें उतनी ही सीधी-सरल है जितनी सीधी जलेबी होती है।

## साथ चलने का इतिहास



**विवेक मिश्र**

चल पड़ते हैं बिना किसी पूछताछ के
कहां जाना है, या क्यों जाना है
इस फेर में पड़ने से...
कहीं बेहतर है कि
आप कदम बढ़ा कर चल दें
एक नहीं दो नहीं हजारों कदमों में
साथ चलने का इतिहास दर्ज़ होता है

यह बात दीगर है कि
कब कौन सा कदम चल पड़े
और कौन से कदम में
दुनिया की गति लिखीं हों
इसपर कोई कुछ भी नहीं कहता
और यूं ही , बिना कुछ कहे चल देता है
उस पथ पर जिसे किसी और ने नहीं
पुरुखों ने ही गढ़ा और रचा था ।

जीवन पथ पर
चलने के क्रम में
हम वहां पहुंच जाते हैं
जहां तक जाने के लिए बने हैं
और इस तरह चलते हैं कि
कोई भी चलता हुआ आदमी
समझ में ही नहीं आएं
तो कुछ नहीं किया जा सकता

आदमी जब कदम बढ़ाता है
तो हर कदम के अर्थ होते हैं
बिना अर्थ के ...
कोई भी नहीं आता
यहां सब कुछ...
साथ होने और साथ चलने में
अर्थ की महिमा का गान होता है

पता ही नहीं चलता कि
कब चल दिए
साथ साथ चलते हैं
साथ साथ रहते हैं
इस तरह साथ में जीवन चल पड़ता है

जीवन पथ पर चलने के लिए
साधन नहीं , साथ की जरूरत होती है
आदमी यूं ही नहीं चलता
आदमी जब चलता है
तो उसके साथ
पूरा जीवन चल पड़ता है

बहुतेरे किस्से कहानियां
सब साथ साथ चलती हैं
जीवन पथ पर कोई एक नहीं
अनगिनत चेहरे ऐसे मिलते हैं कि
लगता ही नहीं कि
इनसे पहली बार मिल रहें हैं
ऐसे लगता है कि
युगों युगों से परिचय लिए
मिल रहे हैं
जीवन के साझेपन में
जीवन का कोई भी सिरा
खाली नहीं होता

हर सिरे पर ...
अनगिनत चेहरे टंगे होते हैं
कहते हैं कि जीवन...
साथ साथ चलते रहने से है
जीवन पथ पर कोई भी
अकेला कदम नहीं बढ़ाता
एक न एक साथ
जीवन की राहों में मिलता ही रहता है ।

### साथ-साथ चलना

कोई इसलिए साथ नहीं चलता कि ...
साथ चलने की मजबूरी हो
वह साथ चलता है ,
साथ-साथ चलता है
क्योंकि साथ चलना अच्छा लगता है
जिंदगी इसी तरह कहते हुए चलती है कि
कुछ भी करों... कैसे भी रहो
पर साथ-साथ चलते हुए
जिंदगी की कथा -
जिंदगी की तरह लिखते चलों

एक नहीं दो नहीं अनगिनत मोड़ आयेंगे
न जाने कितने अंधे मोड़ आयेंगे
भटकने और भरमने की कथाएं आती रहेंगी
पर भरमने की जगह
खुलकर जिंदगी के पथ पर दौड़ लगा दो

जिंदगी सुबह-शाम के ध्रुवांतो पर
पटरी की तरह
एक समानांतर दिशा में भागती रहती है

कुछ करों या न करों
पर जिंदगी के पथ पर
मन से दौड़ लगा दो
जिंदगी कुछ और नहीं
साथ-साथ चलने की
एक सुंदर कथा है...।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

# संस्कृति, संस्कार आधारित चित्रण और भारतीय कला

भारतीय कला हमेशा से समय के साथ को दर्शाती रही है और फिर भारतीय ही क्यों लगभग हर देश की कला तत्कालीन समय के मर्म और मुद्दों को उठाती है, हो सकता है कुछ कलाकार कुछ विशेष के चक्कर में कुछ समूह के साथ वाद को बदलने के प्रयास में भी रहते हों और उनकी कृतियां समय के बाकी कलाकारों से अलग रास्ते पर चल रही होती हों लेकिन जो उस समय के हिसाब से चल रहे हैं उनको भी तो नकारा नहीं ही जा सकता। हां इससे इतर जब कला में भारतीयता की भी बात आती है तब कथा चित्रण और संस्कृति पर भी विचार किया जाने लगता है, कला संबंधी अभिप्राय और अलंकरणों पर भी बात होने लगती है। भरहुत, बोधगया से लेकर कोणार्क, सांची, सारनाथ, मथुरा, अजंता, एलोरा या फिर खजुराहो तक में कथा चित्रण के साथ ही अभिप्राय और अलंकरणों की अधिकता है जो संपन्नता को दर्शाती है हालांकि कहीं कहीं अलंकरण की अधिकता बोझिल सी बन पड़ी है पर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर हम बात करें तो प्राचीन ग्रंथों पर गजब की पकड़ होती थी कलाकारों की फलत- हम कह सकते हैं कि तब कलाकार अभ्यास के साथ ही अध्ययन भी खूब किया करते थे। कला एवं साहित्य के आपसी मेल मिलाप का असर कहें या एक दूसरे में खो जाने की मानसिकता का प्रतिफल पर सच्चाई यही है कि तब कृतियों से लोगों का जुड़ाव ज्यादा हो पाता था। कृतियों के साथ पूरा कथानक जुड़ा होता था। धार्मिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि कोई सी भी रही हो पर कलाकार उसके कथानक को आत्मसात करने के बाद ही अपने सृजन में जुटता था। कृतियों में देवांगना, शालभंजिका, प्रेक्षणिका, मातृदेवी, सिंह, या फिर ऐसे ही तमाम और भी उत्कीर्ण या फिर अंकित आकृतियां भारतीय कला के समृद्धि की कारण रही हैं। किसी विचार या भाव को दृश्य रूप प्रदान करना ही कला का मुख्य कार्य रहा है कथा चित्रण भी इसी का विस्तारित रूप है। कथा चित्रण और संस्कृति पर चर्चा के पूर्व संस्कृति पर दृष्टिपात बहुत जरूरी है। संस्कृति समाज का एक अभिन्न अंग है जिससे समाज और भी निखर कर परिष्कृत होता है। संस्कृति ही है जो समाज को पीढ़ी दर पीढ़ी निखरने के मार्ग प्रशस्त करती है तथा अच्छे व बुरे को विलग करने की विलक्षण शक्ति प्रदान करती है। कला और संस्कृति यदि अपभ्रंशित हो गयी तो समाज खोखला हो जाता है, रीढ़ विहीन हो जाता है, अतः हमें अपनी संस्कृति को बचाकर, संवार कर तथा परिष्कृत रूप में सुधार कर हमेशा आने वाली पीढ़ी को सौंपना चाहिए ताकि ऐसे ही कुछ सुधार कर वो अपने आगे की पीढ़ी को दे सकें। संस्कृति को बचाने का कार्य करती है कला या दूसरे शब्दों में कहें तो कथा चित्रण भी। कला में ही लोक के सांस्कृतिक परिवेश, परंपरा की विस्तारित व्याख्या होती है। खाली दीवारों को अशुभ मानने की परंपरा भी भारत मे रही है। सांस्कृतिक, मांगलिक आदि शुभ आयोजनों में अलंकृत, विवरणात्मक आदि कृतियों का सृजन और ऐसे मौकों पर सभी का कलाकार बन जाना और दर्शकों का स्वत- जुड़ाव हो जाना भारतीय कला की थाती रही है जो लोक संस्कृतियों के माध्यम से आज भी जिंदा है। किसी भी पारंपरिक, सांस्कृतिक मौकों पर सभी घरों में चित्रों का निर्माण वो भी आम जनमानस के द्वारा कला के आम भाषा में सब कथा चित्रण के ही अंग तो हैं। स्वास्तिक के प्रयोग से लेकर शादी-विवाह में दीवारों पर बनीं कृतियां, पूजा-पाठ और चौक पुरना, कोहबर के चित्रण में देशज अंदाज में ही सही पर हर चित्र में कथा होती है, कुछ में प्राचीन तो कुछ में आधुनिक कथानक को भी ढाला जाता है पर कथा होती जरूर है।

संस्कृति सामाजिक विकाश को प्रेरणा प्रदान करती है। संस्कृति के चर्चा पर के. एम. मुंशी के बोल- हमारे रहन-सहन के पीछे जो मानसिक अवस्था, मानसिक प्रवृत्ति है, जिसका उद्देश्य हमारे जीवन को परिष्कृत, शुद्ध और पवित्र बनाना है तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना है, वही संस्कृति है। रही बात भारतीय कला में संस्कृति की तो झुठलाया नही जा सकता कि प्रागऐतिहासिक से लेकर आज तक हमारे यहां के हर कला में संस्कृति की झलक बेशुमार प्रवाहित है। कथा चित्रण और संस्कृति के विषय में यह विदित है कि रामायण, महाभारत, गीतगोविंद, बालगोपाल तमाम पर आधारित चित्र पाये गये। अजन्ता, बाघ, जोगीमारा आदि में अधिकतर चित्र किसी न किसी घटना पर ही आधारित है जहां पर चित्रों के साथ ही घटना का भी जिक्र किया गया है। इलेस्ट्रेशन भाषाओं के डोर में नही बंधा है बल्कि किसी भी देश, दुनिया, धर्म के लोग इसे आसानी से समझ सकते हैं और समझ कर अपने कर्तव्य को समाज के अनुकूल परिवर्तित कर सकते हैं।

जोगीमारा गुफा जिसे पहले एक देवदासी का निवास समझा गया था, हालांकि था नही, से प्राप्त शिलालेखानुसार- यह वरुण देवता का मन्दिर था और जैन धर्म का इसकी कला पर प्रभाव था, वरुण देवता के सेवा में ''सुतनुका'' नामक देवदासी रहती थी। इनसे सम्बन्धित कहानियों का चित्रण जोगीमारा में मिलता है। जोगीमारा में ही संभवतः पौराणिक गजग्रह कथा का चित्रण भी प्राप्त हुआ है। अजंता से स्तूप पूजा का जो चित्र प्राप्त हुआ है जिसमे लगभग सोलह व्यक्तियों का समूह दर्शाया गया है वह भी कथा पर ही आधारित है जहां किसी राजा अथवा श्रेष्ठी द्वारा चैत्य को बनवा कर संघ को भेंट देने के समारोह की घटना वर्णित है। गुफा संख्या दस के साम जातक का चित्र भी साम नामक व्यक्ति के अपने अंधे माता-पिता की सेवा पर आधारित है जो श्रवण कुमार के कहानी से पूर्णतः मेल खाती हुई सी है। 'मरणासन्न राजकुमारी' भी कथा पर ही आधारित है जिसको तपस्वी कलाकारों ने सजीवता के शिखर पर ला खड़ा किया था जिसके बारे में ग्रिफिक्स महोदय का मत- फ्लोरेंस का चित्रकार इससे अच्छा रेखांकन कर सकता था और वेनिस का कलाकार अच्छे रंग भर सकता था, किन्तु दोनो में से कोई इससे अधिक सुंदर भाव का प्रदर्शन नही कर सकता था। उन्ही के दूसरे शब्दों में- भावना, करुणा तथा कथा चातुर्य की दृष्टि से इससे बढ़कर कला इतिहास में कोई प्रमाण नही है। अजन्ता के लगभग सभी चित्र किसी न किसी घटना या कहानी पर ही आधारित है, मतलब कथा चित्रण का ही एक रूप है अजन्ता। पाल शैली में भी साधनमाला, गन्धव्यूह, करनदेवगुहा, पंचशिखा जैसी पोथियां प्राप्त हुई हैं जो कथा चित्रण युक्त हैं। गुजरात में बसंत बिलास नामक दृष्टांक चित्रण प्राप्त होता है जो कालीदास की रचना ऋतुसंहार पर आधारित है जिसमे विशेषतः फाल्गुन मास का मोहक चित्रांकन हुआ है, कविराज विल्हण और उनकी प्रेयसी चम्पावती की प्रणयलीला का चित्रांकन विल्हण कृत चौर पंचाशिका में अंकित है। मार्कण्डेय पुराण, दुर्गाशप्तसती, रतिरहस्य, कामसूत्र सम्बन्धी चित्र जैन कलाकारों द्वारा निर्मित किये गये। अगर देखा जाय तो रतिरहस्य, दुर्गाशप्तसती, बालगोपालस्तुति आदि से सम्बन्धित शैली के चित्रों का निर्माण सातवीं शताब्दी से ही गुजरात, मारवाण में होने लगा था। राजस्थान तो चित्रों और शैलियों का गढ़ रहा है जिस पर कई-कई आलेख तैयार किया जा सकता है। मुगल कालीन चित्रावलियों में हम्जानामा भी विशेष है जिसके चित्र सूती कपड़े पर बनाये गये थे। अकबरनामा भी कम महत्वपूर्ण नही है, अनवार-ए-सुहैली, रम्जानामा, आदि भी कथा चित्रण के इतिहास को बखूबी बयां करते से प्रतीत होते हैं। भारतीय कला में संकेतों का भी खूब बोलबाला रहा है जिसके पीछे भी कोई न कोई कथानक ही कार्य करती रही है। पूर्णघट या भद्रकलश से लेकर मांगलिक प्रतीकों में श्रेष्ठ स्वास्तिक चिन्ह जिनके बारे में कहा जाता है कि यह सूर्य का प्रतीक है, जीवन में प्रकाश फैलाने का श्रोत सूर्य हैं फलत- प्रकाश, विकास के भाव से स्वास्तिक का जुड़ाव स्वत- मान्य हो जाता है। चतुर्भुजी आकार के वजह से इसे चार दिशाओं के मूर्त रूप में भी देखा जाता है मतलब साफ है कि स्वास्तिक की पूरी व्याख्या के पीछे संकेत और संकेत के पीछे लंबा कथानक है। ब्राह्मण, बौध, जैन किसी भी आधार पर कृतियों को देखा और परखा जाय तो कहीं न कहीं कथानक जरूर होगा। शंख, गदा, पुष्प, चक्र जैसे हजारों प्रतीकों को चित्रों में प्रयोग में लाया गया है और सभी के पीछे कथानक है, सभी के पीछे संस्कृति है हां समय के साथ प्राचीनता से नवीनता का फर्क जरूर दिखाई देगा पर कला निरंतर इन्हीं सभी परिवर्तनों के बीच अपनी यात्रा पूरी करती रहती है, कलाकार और तमाम वाद साथ आते और साथ छोड़ते रहते हैं जबकि कला समय की भांति निरंतर प्रगतिशील रहते हुए आगे बढ़ रही होती है।

साक्षात्कार : पद्मश्री पंडित अजय चक्रवर्ती

# सिर्फ सुनने की नहीं, देखने की चीज भी है संगीत

**पंडित अजय चक्रवर्ती के गायन के एक सैकड़ा से अधिक एल्बम प्रकाशित हो चुके हैं।आपके गायन में अनेक विशुद्ध शास्त्रीय गायन शैलियों और स्वरों का सम्मिलन पाया जाता है। ख्याल गायकी में उत्कृष्ट तालीम प्राप्त करने के उपरान्त भी वे संगीत की कई सरल और लोकप्रिय शैलियों जैसे ठुमरी,टप्पा, भजन, कीर्तन, लोक एवं फिल्म संगीत के साथ ही आधुनिक गायन शैली में भी गायन करते हैं। अपने गुरु ज्ञान प्रकाश घोष से प्रभावित होकर, उन्होंने श्रुतिनंदन नाम से एक संगीत शाला भी स्थापित की है।**

दिनेश पाठक

लेखक एवं सांस्कृतिक स्तंभकार

पंडित अजय चक्रवर्ती का जन्म, कोलकाता में हुआ था। उन्होंने संगीत में अपनी स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा कोलकाता के प्रतिष्ठित रविन्द्र भारती विश्वविद्यालय से प्राप्त की।1977 में उन्होंने कोलकाता की आईटीसी संगीत रिसर्च अकादमी में प्रवेश लिया। उनके सबसे पहले गुरु, स्वयं उनके पिता थे। उनके बाद उन्होंने अपने संगीत की शिक्षा पन्नालाल समान्त, कनैदास बैगारी और ज्ञान प्रकाश घोष जैसे गुरुओं से प्राप्त की। पंडित अजय चक्रवर्ती को पटियाला-कसूर घराने का वंशज और अग्रणी माना जाता है, लेकिन, वे मुख्य रूप से उस्ताद बड़े गुलाम अली खां साहब की गायकी का प्रतिनिधित्व करते हैं।

## प्रस्तुत है उनसे की गई बातचीत के मुख्य अंश

कई पारंपरिक संगीतज्ञों का यह कहना है कि अकादमिक संगीत शिक्षा सिर्फ आजीविका का प्रबंध करने में ही समर्थ होती है, इसलिए आमतौर पर युवा इसी दृष्टिकोण से संगीत के महाविद्यालयों में प्रवेश लेता है,आप लंबे समय से संगीत के अकादमिक स्वरूप यानी विश्वविद्यालय आदि से जुड़े रहे हैं,इस बारे में आपका क्या सोचना है?

देखिए, संगीत की शिक्षा तो अपरंपार है,मरते दम तक यह शिक्षा ली जा सकती है।परफॉर्मिंग आर्टिस्ट के लिए गुरु शिष्य परंपरा में गुरु से सीखना और खुद से उसे विकसित करना ये दोनों ही बात बहुत जरूरी है। आप विश्वास नहीं करेंगे 27- 28 साल की उम्र में जब मैंने आईटीसी ,संगीत अकादमी ज्वाइन की थी तब मैं दिन में 13-14 घंटे रियाज़ किया करता था और मेरी यह दिनचर्या लगातार सात-आठ साल तक चली। कठिन प्रयास सहज गायन लाता है ज तो मेहनत सबसे महत्वपूर्ण है। काम के प्रति सच्चाई चाहिए और सेल्फ डिसिप्लिन, संगीत सिर्फ सुनने की चीज नहीं है ज देखने की चीज भी है। जैसे हम कहते हैं न, इसे ज़रा खा कर देखो उनसे जरा बात करके देखो, तो खाकर देखने का जो मतलब है या फिर बात करके देखने का जो मतलब होता है उसे वही समझते हैं जो करते हैं। इसी प्रकार संगीत भी देखकर सीखने का चीज है,सुनकर सीखने का चीज नहीं है। शुरुआत में ज़रूर सुनकर सीखते हैं लेकिन बाद में देखकर ही सीखते हैं, यानी संगीत देखने की चीज भी है ज संगीत को आत्मसात करना ज़रूरी है।

मैं स्वयं पिछले बीस साल से ऑनलाइन क्लासेज लाइव ले रहा हूं। आज तक किसी ने यह नहीं किया। यह इसलिए कर रहा हूं कि हर किसी के लिए पुराने समय जैसे गुरु के घर में रहकर साधना करना अब मुश्किल है, न गुरु के पास समय है। इसलिए मैं जो लाइव क्लास करता हूं उसे अगले छह माह तक आर्काइव कर के रखता हूं कि जब भी शिष्य चाहे फिर से रियाज़ कर सके।

आपने ऑनलाइन शिक्षा की बात की, तकनीक निरंतर विकसित हो रही है,सुनकर सीखने के कई और माध्यम भी हैं,तो समक्ष में गुरु से सीखने के संदर्भ में इन्हें आप कहां पाते हैं?

सबसे उत्तम तो गुरु के पास जाकर सीखना ही है,उसके बाद ऑनलाइन लाइव शिक्षा जो मैं कर रहा हूं वो भी काफी ठीक है।इसीलिए मैंने उसे नाम दिया है,गुरु शिष्य परंपरा ऑनलाइन क्लास।वो मुझसे लाइव सवाल पूछते हैं, मैं उनकी शंका का समाधान करता हूं, बाद में वो साउंड क्लिप भेजते हैं कि उनसे क्या सीखा वो सुनाने के लिए। सुनने के बाद में अपना कॉमेंट भेजता हूं।

फिर साल में दो चार बार मैं स्काइप क्लास भी करता हूं सबका एक साथ। पूरी दुनिया में मेरे ऐसे लगभग डेढ़ दो सौ शिष्य हैं और यह बिजनेस के हिसाब से नहीं है, दरअसल हम इसके जरिए दुनियाभर में भारतीय संगीत को स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं अन्यथा ऑस्ट्रेलिया में बैठे किसी युवा के लिए सिर्फ भारतीय संगीत सीखने हिंदुस्तान आना थोड़ा मुश्किल है।अगर यह ऑनलाइन प्रशिक्षण नहीं होता तो ये कैसे संभव होता?

कहते हैं,संगीतज्ञ परिवार में जन्म लेने से सीखने में आसानी होती है,लेकिन यह जरूरी तो नहीं है कि संगीत घराने में जन्म लेने वाले व्यक्ति की रुचि भी संगीत में ही हो ?

नहीं ऐसा बिल्कुल नहीं है! टैगोर का बेटा साहित्यकार नहीं बन सका, बिस्मिल्लाह खां के परिवार में भी कोई उस स्तर पर नहीं पहुंचा, पंडित भीमसेन जोशी का भी कोई नुमाइंदा नहीं है, एमएस शुभलक्ष्मी की परंपरा को आगे ले जाने वाला कौन है? लता मंगेशकर के स्तर तक भी परिवार का कोई नहीं पहुंचा, तो ये बात सही नहीं है। दरअसल, यह करतब विद्या है, पहले कर तब कुछ मिलेगा।किसी का बेटा बेटी होने से कुछ नहीं होगा।मेरी बेटी कौशिकी ने खुद किया तो उसे मिला ज ये उसका मेहनत है उसका भाग्य है, इसमें उसका मेरी बेटी होने का कोई श्रेय नहीं है।

मेरी बेटी कौशिकी चक्रवर्ती अपने गायन को लेकर दुनिया भर में प्रसिद्ध हो गई इसकी मुझे प्रसन्नता है। लेकिन, मुझे अधिक खुशी होती यदि उसके सामने मुकाबले के लिए और भी कई युवा कलाकार होते। मैं कौशिकी जैसे दस युवा कलाकार तैयार करना चाहता हूं। मुझे अपने आसपास ऐसे तमाम युवा कलाकार नज़र आते हैं जिनमें ऊंचाई पर पहुंचने का माद्दा होता है। उन्हें उनके पालकों का सहयोग और गुरु का उचित मार्गदर्शन मिले और उनमें कुछ कर दिखाने की जिजीविषा हो तो उन्हें आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता।

पीढ़ी दर पीढ़ी जीवन के हर एक क्षेत्र में तमाम बदलाव देखने में आ रहे हैं,आप लगभग पांच-छह दशक से संगीत के क्षेत्र में संलग्न हैं, आपको क्या कुछ परिवर्तन नज़र आया?

मेरा मानना है कि परिवर्तन होना चाहिए।कुछ तो हो रहा है, लेकिन यंग जनरेशन अधिकतर फ्यूजन में लगे हैं,भारतीय और विदेशी संगीत के।लेकिन उन्हें मालूम नहीं है कि इंडियन म्यूजिक इज इटसेल्फ ए फ्यूजन ( भारतीय संगीत स्वमेव फ्यूजन है) हम जब गाते हैं और हमारे साथ तबला बजता है,सारंगी बजाते है तो इट्स ए फ्यूजन। हमें दूसरे देश का इंस्ट्रूमेंट लेने का जरूरत ही नहीं है। ... फ्यूजन का अर्थ है एक संपूर्ण समागम जो श्रोताओं द्वारा एक ही क्षेत्र और अनुभव में एक अलग खुशबू पैदा करता है, जिसे शुरुआती समय में महसूस किया जाता था। थोड़ा सा सुधार आए, प्रेजेंटेशन में फर्क लाया जाए तो अच्छा है और समझा के गाना चाहिए, कम्युनिकेशन होना चाहिए श्रोता के साथ।

## पंडित अजय चक्रवर्ती को प्राप्त सम्मान

राष्ट्रीय सम्मान 1989, कुमार गंधर्व पुरस्कार 1993, संगीत नाटक अकादमी अवार्ड 2000, पद्मश्री 2011, बंग भूषण सम्मान 2012, राष्ट्रीय तानसेन सम्मान 2015, पंडित ओंकारनाथ ठाकुर शास्त्रीय संगीत अवार्ड 2014-15, पद्म भूषण 2020

# ओकल्ट विधा में डूबते-उतराते वस्या की तथा-कथा

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

यूट्यूब के सितारे भुवन बाम ने पिछले साल वेब सिरीज ताजा खबर के साथ अभिनय की जोरदार पारी शुरु की थी। एक मामूली सफाईकर्मी वसंत गावड़े उर्फ वस्या (भुवन बाम) की जिंदगी वक्त से पहले हर खबर मिलने के अनूठे वरदान जो ओकल्ट विद्या के कारण सम्भव होता है उसके चलते कैसे रातों रात बदल जाती है, यह रोचक कहानी काफी पसन्द भी की गई थी। इसी ताजा खबर का सिलसिला आगे बढ़कर दूसरे सीजन यानी ताज़ा खबर-टू की बुनावट की गई है । अच्छे संवाद, तेज़ गतिऔर सिरीज़ के एक्टर्स की ईमानदार अदायगी के बावजूद कहानी में ताजगी की कमी से ताज़ा खबर-टू में वो बात नहीं आ पाई जो पिछली ताज़ा खबर में थी। इस दूसरी पारी की कहानी पहले सीज़न से आगे बढ़ती है, जहाँ वस्या को ताज़ा ख़बर ऐप पर अपनी मौत की खबर मिलती है। मरने से पहले वह अपने पाप कम करने के लिए गरीबों में पैसे बाँटता है, तभी उसे गोली लग जाती है। लेकिन जल्द ही यह राज खुल जाता है कि असल में वस्या मरा नहीं है। उसने खुद अपनी मौत का ड्रामा रचा था, क्योंकि उसकी गलत टिप के चलते क्रिकेट के सट्टे में करोड़ों रुपये और अपनी साख गँवाने वाला डॉन युसूफ (जावेद जाफरी) उसकी जान के पीछे पड़ा है और वस्या को उसके 500 करोड़ रुपये के नुकसान की भरपाई करनी है। अपने घमंड और अपनी अकड़ के चलते वस्या अपनों का साथ भी खो देता है। ऐसे में, आसमान से धरती पर आ जाने के बाद वस्या कैसे अपने माता-पिता (अतिशा नायक-विजय निकम), अपने जिगरी यार पीटर (प्रथमेश परब), अपने प्यार मधु (श्रिया पिलगांवकर) और अपने हमदर्द महबूब भाई (देवेन भोजानी) का भरोसा कैसे वापस जीतता है इसके लिये पटकथा में बड़ी कुशलता के साथ कुछ प्रसंग और? कुछ दृष्य़ विधान गढ़े हैं । इधर युसूफ भाई, जो वस्या के हर दांव-पेंच के बाद वसूली की रकम पांच सौ से छह सौ और फिर एक हज़ार करोड़ तक बढ़ाता जाता है, उनसे छुटकारे का भी बड़ा रोमांचक समाधान तलाशा गया है ।हिमांक गौर का निर्देशन ठीक है लेकिन उन्हें सिरीज में और कसावट लानी चाहिये ।पहले सीजन में एक शॉकिंग एलिमेंट था जो अब नहीं है, तो सिरीज को जितना टाइट रखते उतना मजा आता, अच्छे एक्टर्स को उन्होंने थोड़ा-सा तो वेस्ट किया है. कुल मिलाकर भुवन बाम के प्रशंसक हैं तो ये सिरीज ज़रुर देखियेगा ।

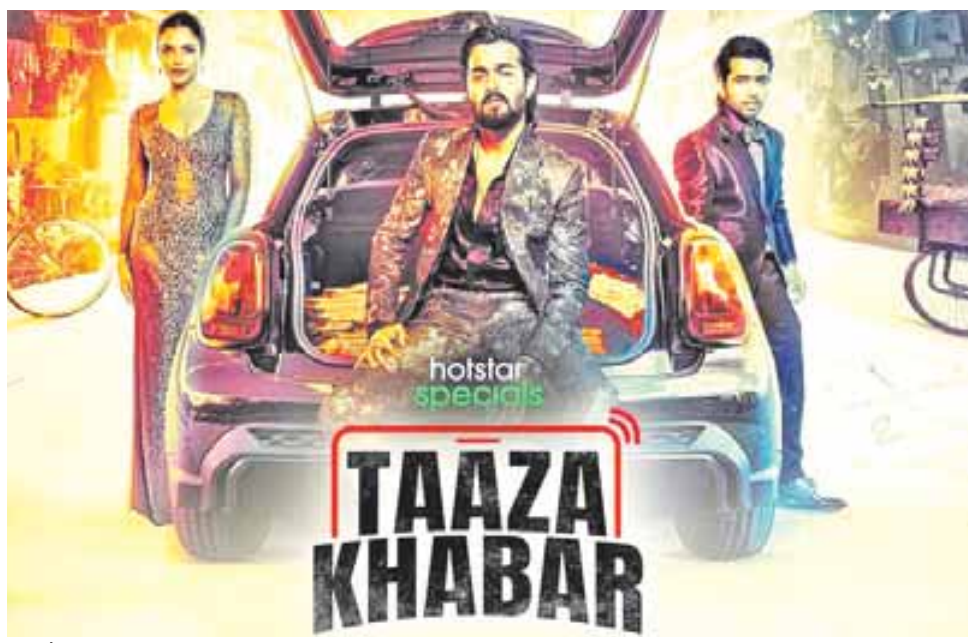


कथा-पटकथा की बुनावट के परिप्रेक्ष्य में यह एक एक अच्छी वेबसिरीज है । केन्द्रीय भूमिका में भुवन बाम इस सिरीज की जान हैं । भुवन की फैन फॉलोइंग गजब है और इसका फायदा इस सिरीज़ को मिलना तय है. भुवन ने इस सिरीज से साबित किया है कि कंटेंट क्रिएटर एक्टिंग कर सकते हैं । लेकिन यहाँ बात सिर्फ भुवन बाम की है, सारे क्रिएटर नहीं कर सकते. इस वेबसिरीज में वो सारे मसाले डाले गए हैं जो एक हिन्दी फिल्म में होते हैं। एक अभिनेता के रुप में इस सिरीज़ में भुवन बाम के कई रूप दिखाते हैं, बेटा, प्रेमी, मित्र, पैसे के घमंड में चूर इंसान और हर रूप में भुवन जमे हैं. भुवन ने अपनी एक्टिंग को काफी निखारा है और उनकी मेहनत दिखती है, जबरदस्ती की हीरोपंती नहीं दिखाई गई है । जहाँ जितनी जरूरी है वहां उतना ही एक्शन है ।जावेद जाफरी ने इस सिरीज को एक नया एंगल दिया है और वो इस रोल में जमे हैं. उन्हें विलेन के रूप में देखकर मजा आता है, भुवन के साथ उनके सीन कमाल के हैं । श्रिया पिलगांवकर ने भी अपने किरदार को अच्छे से निभाया है, उनमें एक अलग ही कॉन्फिडेंस दिखता है जो बताता है कि उनमें काफी टैलेंट है और उसका सही इस्तेमाल किया जाना चाहिए । देवेन भोजानी का काम अच्छा है, प्रथमेश परब ने भी अच्छा काम किया है और शिल्पा शुक्ला का काम भी अच्छा है. बाकी के सारे कलाकारों की एक्टिंग भी ठीक है ।

## भारत स्काउट एवं गाइड ने बेटी बचाओ दिवस मनाया

**देवास।** 5 अक्टूबर 2024 को बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ दिवस भारत स्काउट एवं गाइड मध्य प्रदेश जिला संघ देवास द्वारा बड़ी धूमधाम से शासकीय नूतन उ. मा. वि.देवास में मनाया। हेमेंद्र निगम काकू ने बताया कि जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला कमिश्नर देवास हरिसिंह भारतीय के निर्देशन में विष्णु वर्मा जिला मुख्य आयुक्त,राजश्री काले जिला कमिश्नर गाइड, ममता सक्सेना जिला प्रशिक्षण आयुक्त गाइड,एन के जोशी व संगीता वाटसन जिला उपाध्यक्ष ने सर्वप्रथम माँ सरस्वती जी के चित्रो पर माल्यार्पण कर द्वीप प्रज्वलित किया। तत्पश्चात विष्णु वर्मा सर के

द्वारा कार्यक्रम में पधारी सभी मातृ शक्ति स्वरूप गाइडर का स्वागत स्काउट एवं गाइड परम्परा अनुसार स्कार्फ व वागल से किया। इस अवसर पर शहर के स्काउट एवं गाइड भी विशेष रूप से उपस्थित थे जिन्हें बेटी बचाओ अभियान की शपथ दिलाई गई । विष्णु सर ने बताया कि हमारे प्रदेश में बहुत अधिक भ्रूण हत्या होने लगी थी तब उसे रोकने के लिए पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बेटी बचाओ अभियान को पूरे प्रदेश में चलाया। ममता सक्सेना ने कहा कि बेटी है तो कल है बेटियां नहीं होगी तो तुम अपने कुल का वंश कैसे बढ़ाओगे। राजश्री काले ने बताया कि आज के समय की बेटियां भी बेटो से कम नहीं है। आजकल की बेटियां डॉ, इंजीनियर, पायलेट है,रेल भी चला रही है ओर देश के अधिकांश विभागों में नौकरियां कर रही है । मनोज पटेल डी ओ सी के नेतृत्व में विशाल रैली निकाली जिसमें स्काउट एवं गाइड नारे लगाते हुए चल रहे थे - बेटी है तो कल है, बेटा-बेटी एक समान यह तो है आपकी शान, बेटी पढेगी तभी तो आगे बढ़ेगी। रैली विभिन्न मार्गो से होती हुई पुनः संस्था पहुंची । इस अवसर पर मनोज पटेल, देवकरण सोलंकी, भूपेन्द्र शर्मा, दीपचंद्र सोनी, जसवंत सिंह चावड़ा,कोमल चौधरी, उर्मिला गुनाया, रिंकू कुशवाह का सराहनीय योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन जिला स्काउट गाइड संघ के सचिव जितेन्द्र मंडलोई ने किया। आभार रिंकू कुशवाह ने माना।

## मिशन शक्ति अभियान के अंतर्गत गतिविधियों का आयोजन

**देवास।** एकीकृत बाल विकास परियोजना देवास दक्षिण के सेक्टर बालगढ़ अंतर्गत मिशन शक्ति अभिनंदन अभियान के तहत गतिविधियों का आयोजन परियोजना अधिकारी समीक्षा जैन एवं सेक्टर पर्यवेक्षक वंदना खरे के मार्गदर्शन में 2 अक्टूबर से किया जा रहा है। जिसमें वार्ड 42 एवं 43,22 के आंगनवाड़ी केंद्रों पर कन्या पूजन एवं महिला सुरक्षा रैली का आयोजन एवं बुजुर्ग महिलाओं का सम्मान किया गया। महिलाओं को सुरक्षा कानून एवं अधिनियम की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में संभागीय अध्यक्ष जरीना खान, सीमा नागवाड़े, योजना शर्मा, सोनू दास, चंदनबाला मोदी, सुनीता चौधरी, मंजुला टेटवाल, पूर्णिमा चौहान, प्रेमलता वर्मा, वर्षा मानवाटकर, रितु कलेशरिया, वर्षा मन्वाटकर सम्मिलित रही।

## सायबर सुरक्षा आज की सबसे बड़ी चुनौती है: डॉक्टर वरूण कपूर

**देवास।** ब्लेक रिबन इनिक्षेटीव ''संदेश'' अभियान के तहत सायबर सुरक्षा एवं जागरूकता'' विषय पर पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय बीएनपी देवास में डॉक्टर वरूण कपूर-विशेष पुलिस महानिदेशक द्वारा 716 वीं कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 215 विद्यार्थियों एवं 39 शिक्षकगणों ने भाग लिया ।

डॉक्टर वरुण कपूर के मुख्य आतिथ्य में संपन्न कार्यशाला में बैंक नोट प्रेस के महाप्रबंधक श्री केदारनाथ महापात्र, विद्यालय प्राचार्य श्री भरत कुमार सेठ, इंस्पेक्टर श्रीमती पूनम राठौर एवं उनकी टीम सहित कई गणमान्य नागरिक एवं विद्यार्थी सम्मिलित हुए। कार्यशाला के प्रारंभ में प्राचार्य भरत कुमार सेठ, उप प्राचार्य श्री अजय , सुरेश पुरोहित, नंदिनी सक्सेना, दीपक नागदे ने पुष्प गुच्छ भेंट कर मुख्य अतिथि का स्वागत किया। कार्यशाला को संबोधित करते हुये डॉक्टर कपूर द्वारा बताया गया कि फिशिंग बुलिंग, स्टॉकिंग, गेमिंग इत्यादि सायबर अपराध की घटनायें बढ़ रही हैं । इसे आपको समझना होगा व सतर्क एवं जागरूक रहना होगा, तभी आप सायबर अपराध का शिकार होने से बच सकते हैं । सायबर सुरक्षा आज की सबसे बड़ी चुनौती है । सायबर अपराधी दिन-प्रतिदिन

नये-नये तरीकों से सायबर अपराधों को अंजाम दे रहे हैं । अपने डाटा को सुरक्षित रखने के लिये दिशा-निर्देशों का पालन करें । किसी भी ऑनलाईन/सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर अपनी निजी जानकारी, जन्मतिथि,मोबाईल नम्बर,पता इत्यादि साझा न करें। सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक पोस्ट न करें । अनजान ई-मेल/पोस्ट का जवाब न दें । अपने खाते का पासवर्ड किसी के साथ साझा न करें । अपनी प्राइवेसी सेटिंग्स को मजबूत रखें। अपरिचित व्यक्ति जिसे आप नहीं जानते उन्हें ब्लॉक करें । अलग-अलग अकाउण्ट के लिये अलग-अलग एवं मजबूत पासवर्ड बनायें । झांसे या प्रलोभन में न आएं । बैंक में पंजीकृत मोबाईल नम्बर पर भेजी गई लिंक/ओटीपी को किसी दूसरे नम्बर पर फारवर्ड करने के लिये कहने पर फारवर्ड न करें । अनजान लिंक को ओपन न करें । अनजान फोन/वीडियो कॉल व किसी अनजान की फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार न करें । आप किसी सोशल मीडिया पोस्ट, मेल, चैटिंग से असहज हो, तो तुरंत अपने माता-पिता को अथवा विश्वसनीय व्यक्ति को बताएं और पुलिस में शिकायत करें । युवा ऑन-लाईन गेमिंग में ज्यादा समय व्यतीत करते हैं जिसके कारण गेमिंग डिसआर्डर का शिकार हो रहे हैं । इसका फायदा उठाकर अदृश्य अपराधी ऑनलाइन गेम में चैटिंग कर युवाओं को शिकार बनाते है । गेमिंग डिसआर्डर के चलते बच्चे ऑनलाईन गेमिंग में पैसा लगा देते हैं, कर्ज ले लेते हैं और इन सबसे परेशान होकर कई लोग,बच्चे आत्महत्या तक कर लेते हैं । माता-पिता भी सोशल मीडिया के बारे में ज्यादा जागरूक नहीं होते है ।

विद्यार्थियों के प्रश्नों का समाधान डॉक्टर कपूर द्वारा सहजता से किया गया । कार्यशाला में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले दो छात्रों क्रमशः उपासना पारगी एवं आर्यन को डॉक्टर कपूर ने प्रमाण-पत्र व गोल्डन बैज प्रदान कर सम्मानित किया साथ ही कक्षा 10वीं, 11वीं, 12वीं के 8 अन्य विद्यार्थियों को बैजेस प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य श्री सेठ द्वारा स्मृति चिन्ह, अनुशंसा पत्र और पुस्तक डॉक्टर वरूण कपूर को भेंट किया गया । मंच संचालन विद्यालय शिक्षिका श्रीमती कविता जड़िया ने किया। सेमिनार के सफल संचालन में निरीक्षक श्रीमती पूनम राठौर व उनकी टीम के सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा ।

# बैडमिंटन हॉल में खिलाडियों को होना पड़ रहा परेशान, सफाई व्यवस्था भी ठीक नहीं

### 18 लाख की वुडन फ्लोरिंग, मेंटनेंस के अभाव में हो रही खराब

**बैतूल।** बैडमिंटन हॉल में वुडन फ्लोरिंग जगह-जगह से खराब हो गया है। कुछ जगह से उखड़ गया है। खिलाड़ी चोटिल हो रहे है। कोर्ट के वुडन फ्लोरिंग में दीमक लग रही है, इससे जगह वुडन कमजोर हो रहा है। पिछले तीन-चार वर्षों से बैडमिंटन हाल की यही स्थिति है। लेकिन नगरपालिका ध्यान तक नहीं दे रही और न ही मेंटनेंस कराया जा रहा है। इससे खिलाडियों में नाराजगी है। गौरतलब रहे कि 18.56 लाख की लागत से वुडन फ्लोरिंग बना था। जिसका लोकार्पण 9 साल पहले 18 अप्रैल 2015 को जिले के तत्कालीन प्रभारी मंत्री सरताज सिंह, सांसद ज्योति धुर्वे, विधायक हेमंत खंडेलवाल और नपाध्यक्ष अलकेश आर्य की मौजूदगी में हुआ था। बैडमिंटन कोर्ट में खेल युवक कल्याण विभाग ने वुडन फ्लोरिंग का निर्माण कराया था। वुडन लगाने वाली कंपनी को पांच साल तक इसका मेंटेनेंस करना था, लेकिन कंपनी ने कभी मेंटेनेंस नहीं किया और न ही खेल युवक कल्याण विभाग और नगरपालिका ने कभी इस बात पर ज्यादा जोर दिया। परिणाम मेंटेनेंस के अभाव में वुडन फ्लोरिंग खराब हो रही और खिलाडियों को इसका खामियाजा चुकाना पड़ रहा है।

**वुडन पट्टी हटी, खिलाडियों को पैर फंसने का डर-** खिलाड़ी हर्षित, नितिन और वैष्णव साबले ने बताया वुडन पट्टी हटने से नीचे की लकडियां नजर आने लगी हैं। बीच में गेप आ गए हैं। खिलाडियों के पैर फंसने का डर बना रहता है। कुछ जगह तो वुडन फ्लोरिंग की हालत काफी खराब हो चुकी हैं। कुछ जगह वुडन चिकना होने के कारण खिलाड़ी फिसलकर गिर जाते हैं। जिसके कारण बैडमिंटन खेलने वाले खिलाड़ी आए दिन चोटिल हो रहे हैं। फ़्लोर के आसपास गंदगी रहती है। स्थिति यह है कि खिलाडियों को कई बार खेलने से पहले कोर्ट के आसपास सफाई करना पड़ती है। लेकिन इस पर भी नगरपालिका का कोई ध्यान नहीं है।

**नौ साल पहले हुआ था लोकार्पण**

नपा लेती है 300 रूपये शुल्क- नगरपालिका बैंडमिंटन कोर्ट में खेलने के खिलाडियों से 300 रूपये प्रतिमाह शुल्क लेती है। शुरूआत में रजिस्ट्रेशन शुल्क 460 रुपए लिया जाता है। लेकिन सुविधाएं उपलब्ध नहीं कराई जाती, यहां आने वाले खिलाडियों को जगह-जगह गंदगी और वुडन फ्लोरिंग खराब होने के कारण परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बैंडमिंटन हॉल में कबूतर जगह-जगह बीट कर रहे है। इसकी सफाई नहीं कराई जाती है। खिलाडियों ने बताया कि मेंटनेंस नहीं होने के कारण वुडन में दीमक लगने लगी है, यदि जल्द ही वुडन फ्लोरिंग का मेंटनेंस नहीं कराया गया तो यह पूरी तरह खराब हो जायेगी और यहां खिलाडियों को परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

**9 साल में एक बार भी नहीं हुआ मेंटनेंस-** 9 साल पहले वुडन फ्लोरिंग का काम हुआ था, तब से लेकर अब तक ठेकेदार ने भी वुडन फ्लोरिंग का मेंटनेंस नहीं किया। नगरपालिका ने भी इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। जिसके कारण लाखों की लागत से बना वुडन फ्लोरिंग बर्बाद हो रहा है। खिलाडियों का कहना है कि नगरपालिका को समय-समय पर फ्लोरिंग का मेंटनेंस कार्य करवाना चाहिए। इसके अलावा बैडमिंटन हॉल में सफाई होनी चाहिए। अव्यवस्थाओं के कारण यहां खिलाड़ी परेशान होते है। इधन खिलाडियों की संख्या भी लगातार कम हो रही है। अव्यवस्थाओं का ऐसे ही हाल रहा तो जिन उद्देश्यों को दृष्टिगत रखकर बनाया था, वह सकार नहीं हो पायेगा।

**इनका कहना है**

जानकारी मिली थी। जल्द ही बैडमिंटन हॉल के वुडन फ्लोरिंग का मेंटेनेंस कराया जाएगा। यदि फ्लोरिंग उखड़ रही है तो उसकी मरमत कराई जाएगी।

**- ओमपाल सिंह भदौरिया,**
सीएमओ नगरपालिका बैतूल

## अभिमन्यु अभियान के तहत युवा वर्ग, महिला अपराध व नशे के दुष्परिमाण की दी जानकारी

**सुबह सवेरे सोहागपुर।** सोहागपुर थाना अंतर्गत सेमरिटर्न एवं ज्ञान सागर इंटरनेशनल स्कूल में नगर निरीक्षक कंचनसिंह की अगुवाई में अभिमन्यु अभियान प्रारंभ किया गया।इस अवसर पर सोहागपुर पुलिस थाने में पदस्थ पुलिस कर्मियों आदि ने युवा वर्ग पर विस्तृत उद्बोधन देकर समझाईस दी गई। वहीं महिलाओं को महिला अपराधों पर सारगर्भित बातें बताई गई। इसी क्रम में समस्त जनों को नशे करने के दुष्परिणाम पर विस्तार से जानकारी दी गई।

## ब्लैक स्पाट चिन्हित, रेडियम युक्त ड्रम रखे

**सुबह सवेरे सोहागपुर।** एसडीओ पुलिस संजू चौहान,नगर निरीक्षक कंचनसिंह सहित पुलिस बल ने यातायात सुचारू एवं व्यवस्थित रुप से चलने के लिए सोहागपुर , सेमरी हरचंद एवं शोभापुर जगह-जगह ब्लैक स्पॉट चिन्हित किए गए। चिन्हित कर स्थानों पर रेडियम युक्त ड्रम जगह-जगह रखे गए। उल्लेखनीय है कि शोभापुर में एक टेक्टर ट्राली की टक्कर से सलकनपुर माता विजयासन के दर्शनों को जा रही महिला की मौत हो गई। ज्ञातव्य है कि दिनों दिन सलकनपुर माता मंदिर जाने वाले पदयात्रियों की संख्या में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। हालांकि कल ही नगर निरीक्षक ने सोहागपुर,शोभापुर आदि में पुलिस सहायता केंद्र बनाएं थे।

## कैकई ने मांगे दो वरदान, भरत को राज और राम को वनवास

**बैतूल/भौंरा।** शिव मंदिर रामलीला चौक पर चल रही रामलीला में स्थानीय कलाकारों ने शुक्रवार रात राम वनवास का मंचन किया। जिसे देखकर श्रोता मंत्रमुग्ध हो गये। रामलीला में बताया कि राजा दशरथ द्वारा जब सभी मंत्रीगणों की सहमति से अयोध्या का राज राम के हाथो में देने की बात कही तो सभी देवता चिंतित हो जाते है कि ऐसा हुआ तो राक्षसों का नाश कैसे होगा? तब मां सरस्वती से सभी प्रार्थना करते है। मंथरा जाकर कैकई को भडक़ाकर अपना काम कर देती है। रानी कैकई राजा दशरथ से अपने 2 वरदान मांगती है, जिसने भरत को अयोध्या का राज और राम को 14 वर्षों का वनवास मांगती है। भगवान राम के वनवास की बात सुनकर सीता और भाई लक्ष्मण भी उनके साथ वनवास जाने की जिद करते है, बहुत समझाने के बाद भी जब वे नही मानते तो, राम-लक्ष्मण और सीता वनवास के लिए निकलते है। सारी प्रजा को जब यह बात पता चलती है तो पुरवासी भी उनके साथ जाते है। शुक्रवार को राम बारात नगर में निकली गई थी।

## गरबा पंडालों में महिला पुलिस का स्कूटी दल रखेगा असामाजिक तत्वों पर नजर

**देवास।** । नवरात्रि पावन पर्व के अवसर पर म.प्र.शासन के निर्देशानुसार नवरात्रि पर्व के दौरान अलग अलग स्थानों पर पडालों पर माता रानी की स्थापना की गई है इस दौरान महिला वर्ग एवं बालिकाओं के द्वारा गरबा का आयोजन किया जाता है ।

वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में महिला पुलिस बल की स्कूटी पार्टी शहर के पांचो थानो पर रवाना की गई है । उक्त स्कूटी पार्टी के द्वारा गरबा स्थल पर आसामाजिक तत्वों पर विशेष नजर रखने एवं महिला एवं बालिकओं की सुरक्षा हेतु स्कूटी पार्टी बनाई गई जिनके द्वारा देवास शहर में आयोजित होने वाले गरबे एवं पंडालों के आयोजक से निरंतर सपंर्क मे रहेगी ।

गरबा स्थलों पर लगे सभी वालेटियर से निरंतर सम्पर्क मे रहेगी। आयोजित होने वाले गरबा पंडालो के प्रवेश एवं निर्गम द्वार लगे व्यक्तियों से चर्चा करेगी एवं 'मै हूं अभिमन्यु' मे लगे बालको से भी चर्चा करेगी । देवास मे शहर कुल 05 टीमे बनाई जिसकी प्रभारी अधिकारी महिला थाना प्रभारी सुश्री चन्द्रकला अरर्वे रहेगी ।

गठित टीम के द्वारा गरबा स्थल पर असामाजिक तत्वों पर विशेष नजर रखी जावेगी एवं थानो के द्वारा बल के साथ मिलकर असामाजिक तत्वों वैधानिक कार्यवाही भी जावेगी ।

## वन परिक्षेत्र अधिकारी को हटाने को लेकर कर्मचारी लामबंद..

**नर्मदापुरम।** वंदना मेहतो वन परिक्षेत्र अधिकारी सिवनी-मालवा के कार्यकलापों से आहत वन कर्मचारी अब आक्रोश में है अनावश्यक रूप से जो वनरक्षक मंगल पांडे से उसके शासकीय आवास खाली करने को लेकर हुआ बता रहे हैं। अधिकारी द्वारा वनरक्षक से निवास खाली कराने के अत्यधिक दवाब डालने से उसकी मृत्यु 2 अक्टूबर को हार्ट फेल हो जाने से माना जा रहा है, इसे लेकर एक लिखित शिकायत पुलिस थाना सिवनी-मालवा में मंगल पांडे वनरक्षक के पिता ने की है। वन कर्मचारी संघ के संरक्षक मधुकर चतुर्वेदी इस मामले में बताते हैं कि मंगल पांडे वनरक्षक अत्यंत मृदुभाषी , बहुत ही होशियार कर्मचारी थे। इस कर्मचारी की मृत्यु पर शोक प्रकट करने एकत्र सभी कर्मचारियों ने मंगल पांडे वनरक्षक की मृत्यु का कारण वंदना मेहतो वन परिक्षेत्र अधिकारी की प्रताड़ना एवं दमनात्मक कार्य प्रणाली बता रहे थे। साथ ही उन्हें अविलंब हटाने की मांग कर रहे थे बताया। श्री चतुर्वेदी ने कहा कि जिन्हें मेरे द्वारा तथा वन मंडल अधिकारी मयंक गुर्जर द्वारा जांच एवं उचित

कार्यवाही का आश्वासन दिया जाकर स्थिति नियंत्रण में ली गई। उल्लेखनीय है कि वंदना महतो वन परिक्षेत्र अधिकारी सिवनी-मालवा के विरुद्ध वर्ष जून 2023 में भी सभी कर्मचारी लामबद्ध हुए थे। जब वो हरदा में पदस्थ रही तब भी सभी कर्मचारियों ने इनके द्वारा वनरक्षक अजय बामने को प्रताड़ित किए जाने पर भारी विरोध किया था। उक्त महिला अधिकारी को महिला होने एवं अति शीघ्र आंसू बहाने में माहिर बताया जा रहा है जो अधिकारियों को भ्रमित करती रहती है। कर्मचारी तो इन्हें मानसिक रूप से विकृत बता रहे है, जिसकी पुष्टि पुलिस ज्ञढ्ढ सिवनी-मालवा के समक्ष व्यवहार एवं फोटो-ग्राफ तथा आसपास के एकत्र नागरिकों ने भी श्री चतुर्वेदी को बताई है। मामले को लेकर मुख्य वन संरक्षक नर्मदापुरम वृत को लिखे गए पत्र में श्री चतुर्वेदी ने मुख्य वन संरक्षक से अनुरोध किया है कि , इन्हें जल्द से जल्द हटा कर चिकित्सा आवास पर भेजा जाकर scizophrenia का इलाज कराने की सलाह दिया जाना विभाग के हित में होगा।

# एक कदम स्वच्छता की ओर क्रांति की ओर बढ़ते भारत के कदम...



**(स्वच्छ भारत अभियान)**

**बदलता भारत- बदलाव के 10 बरस के साथ - राजेश शर्मा**

'करे कुछ ऐसा काम
बढ़ाये जो भारत देश का नाम।
देश की धरोहर पर है सबका अधिकार.
फिर क्यूं है इसकी सफाई से इनकार..
नही है कोई बहुत बड़ा उपकार.
बस करना है जीवन में बदलाव .
शहर को मान कर घर अपना..
निर्मल - स्वच्छ उसे भी है रखना ।
कूड़े दान में फेकों कूड़ा .
हर जगह ना फेंको कूड़ा।
थूकने को नही है धरती मैया
बदलों अपनी आदत भैया ।
ना करों किसी पड़ोसी का इंतजार ।

देश है सबका, बढ़ाओं स्वच्छता अभियान। ये नयी सुबह है नये भारत की - एक ऐसा भारत जहां स्वच्छता, स्वभाव - संस्कार और आदत सी बन गयी है। ' एक कदम स्वच्छता की और ' 10 सालों से स्वच्छ भारत मिशन का महज स्लोगन नही बल्कि क्रांतिकारी बदलाव लाने वाला मंत्र बन गया है... आज पूरे देश की तस्वीर बदल रही है। 2 अक्टूबर 2014 की तिथि क्रांतिकारी बदलाव लाने वाली तिथि सिध्द हो रही है इसी दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की गई जिसने आज देश में एक जन आंदोलन का रूप ले लिया है.. महात्मा गांधी का सपना था कि भारत स्वच्छ हो, और यह अभियान उसी

## स्वच्छता केवल तंत्र का नहीं, बल्कि हर जन का कर्तव्य है






दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है.. बदलता भारत- बदलाव के 10 बरस से क्रांति की ओर बढ़ते भारत के कदम ....

### स्वच्छता की आदतों को जीवन का हिस्सा बनाना अभियान का उद्देश्य

स्वच्छ भारत अभियान का मुख्य उद्देश्य देश के प्रत्येक नागरिक को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना और स्वच्छता की आदतों को जीवन का हिस्सा बनाना । इसके तहत खुले में शौच मुक्त (ODF) भारत बनाने, कचरा प्रबंधन के सुधार, और स्वच्छ जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने जैसे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए काम किया जा रहा है।

### अभी तक किए गए प्रयास और उपलब्धियां

**1. भारत में 10 करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण हुआ है-** स्वच्छता अभियान के तहत करोड़ों शौचालयों का निर्माण किया गया है, जिससे खुले में शौच की प्रवृत्ति में भारी कमी आई है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, ग्रामीण भारत में लगभग 10 करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण हुआ है इससे न केवल स्वास्थ्य स्तर में सुधार हुआ है, बल्कि




महिलाओं की सुरक्षा भी सुनिश्चित हुई है।

**2. कचरा प्रबंधन-** ठोस अपशिष्ट प्रबंधन को लेकर भी बड़ी पहल की गई है। देशभर में कचरा अलग करने के लिए गीले और सूखे कचरे के लिए अलग-अलग डिब्बे लगाए गए हैं। इसके अलावा, कचरे से ऊर्जा उत्पादन और रिसाइक्लिंग के प्रयासों में भी वृद्धि हुई है।

**3. स्वच्छता जागरूकता अभियान-** स्वच्छ भारत अभियान के तहत देश के हर राज्यों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए अनेक कार्यक्रम चल रहे है। सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों ने मिलकर स्कूलों, गांवों और शहरों में स्वच्छता रैलियों, पोस्टर प्रतियोगिताओं और अन्य जागरूकता गतिविधियों के आयोजन से जनजागृति की अलख जगाई है।

**4. सफाई कर्मचारी और टेक्नोलॉजी का समावेश-** सफाई कर्मचारियों के लिए बेहतर सुविधाएं और स्वच्छता संबंधी नए उपकरण उपलब्ध कराए गए हैं, इससे न केवल सफाई व्यवस्था में सुधार हुआ है, बल्कि स्वच्छता कर्मचारियों का सम्मान भी बढ़ा है। रोबोटिक सफाई उपकरणों का भी प्रयोग शुरू किया गया है जिससे खतरनाक सफाई कार्य सुरक्षित हो सके।

### आगे की चुनौतियां

हालांकि स्वच्छ भारत अभियान ने बहुत सी उपलब्धियां हासिल की हैं, लेकिन अभी भी चुनौतियां मौजूद हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता की आदतों को पूरी तरह से आत्मसात करने में समय लगेगा। इसके अलावा, कचरा प्रबंधन और जल संसाधनों के संरक्षण में भी लगातार सुधार की आवश्यकता है।

स्वच्छता अभियान एक लंबी यात्रा है, जिसका अंतिम लक्ष्य है एक स्वच्छ और स्वस्थ भारत। इसके लिए न केवल सरकार, बल्कि हर नागरिक की भागीदारी आवश्यक है। हम सभी को मिलकर इस क्रांति का हिस्सा बनना होगा ताकि आने वाली पीढ़ियां स्वच्छ और सुंदर भारत में जीवन व्यतीत कर सकें।

स्वच्छता केवल सरकार का नहीं, बल्कि हर भारतीय का कर्तव्य है। जब तक हम सभी इसमें योगदान नहीं देंगे, तब तक यह अभियान पूरी तरह सफल नहीं होगा।

# खुद को बूढ़ा मान लिया शाहरुख़ ने

**अबू धाबी में आयोजित हुए आईफा 2024 में दोनों ने अभिनेता विक्की कौशल के साथ कार्यक्रम की मेजबानी की। इस दौरान दोनों के बीच मजेदार बातचीत हुई। इस महफिल में बॉलीवुड से लेकर साउथ इंडस्ट्री के सितारों ने चार चांद लगाए। साउथ और बॉलीवुड के लिए अवॉर्ड विनर्स के नाम भी सामने आ गए हैं। आईफा 2024 से बॉलीवुड इंडस्ट्री के तमाम सितारों के वीडियोज और फोटोज वायरल हो रहे।**

इस आयोजन का शाहरुख खान और फिल्ममेकर करण जौहर का एक वीडियो सामने आया। इसमें करण जौहर ने शाहरुख खान से तमाम सवाल किए, जिनका उन्होंने जवाब दिया। इस दौरान शाहरुख खान ने मान लिया है कि वह बूढ़े हो गए हैं। दोनों के सवाल-जवाब के अंदाज को लोगों ने पसंद किया। करण जौहर ने शाहरुख खान से सवाल किया 'आप पहले काफी वेडिंग शोज करते थे, अब जाना क्यों बंद कर दिया है?' इस पर उन्होंने जवाब दिया कि पहले मैं लोगों के दामाद की उम्र का था, अब मैं ससुर की उम्र का हो गया हूं।

मैं अब बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना सा लगता हूं।' करण जौहर ने पूछा कि हम जानते हैं कि बंगले मन्नत में रहते हो, लेकिन आपने कभी अपार्टमेंट में रहने का सोचा है!' इस पर शाहरुख खान ने कहा कि हो ही नहीं सकता। क्योंकि, मेरे ऊपर कोई हो ही नहीं सकता!' शाहरुख खान ने कहा दिग्गजों के बारे में सबसे बड़ी बात यह है कि उन्हें पता होता है कि कब रुकना है, कब रिटायर होना है। महान सचिन तेंदुलकर, फुटबॉलर सुनील छेत्री और टेनिस खिलाड़ी रोजर फेडरर की तरह, वे सभी जानते हैं कि कब रिटायर होना है।

मुझे लगता है कि अब समय आ गया है कि आपको भी संन्यास लेना चाहिए। करण जौहर ने इस मजाकिया टिप्पणी का जवाब देते हुए कहा, उस मानक के अनुसार, आप रिटायर क्यों नहीं हो जाते? शाहरुख ने चुटीले अंदाज में कहा, मैं और धोनी अलग-अलग दिग्गजों की लीग से हैं, हम कई बार नहीं कहने के बावजूद आईपीएल में दिखाई देते रहते हैं। इस दौरान दर्शकों में बैठे विक्की कौशल ने कहा रिटायरमेंट दिग्गजों के लिए होती है, किंग हमेशा के लिए होते हैं।

इसके बाद करण ने पूछा कि आप जब रिटायर हो जाएंगे तो इंडस्ट्री में अगला किंग ऑफ रोमांस कौन होगा? सिर हिलाते हुए शाहरुख बड़े ही सादगी से कहते हैं एक्कुअली रोमांस भी उनके साथ रिटायर हो जाएगा। जैसे ही शाहरुख ये कहते हैं लोग जमकर तालियां बजाते हैं. वहीं उनकी को-स्टार रानी मुखर्जी भी मुस्कुराने लगी। करण कहते हैं कि यानी आपके बाद फिर कोई पलट-पटल नहीं कहेगी, शाहरुख कहने बिल्कुल नहीं।

इसके अलावा शाहरुख खान ने करण जौहर के तमाम सवालों के जवाब दिए। शाहरुख खान और करण जौहर के फनी इंटरव्यू सेगमेंट को लोग खूब पसंद कर रहे हैं ,दोनों स्टार के वीडियो पर फैंस रिएक्शन भी दे रहे हैं। शाहरुख खान के वर्क फ्रंट की बात करें तो वह फिल्म 'किंग' में काम करते नजर आएंगे। शाहरुख खान के साथ इस फिल्म में उनकी बेटी सुहाना खान भी हैं। ये पहला मौका होगा जब शाहरुख खान और सुहाना खान एक फिल्म में काम करने वाले हैं। शाहरुख खान पिछली बार दिसंबर, 2023 में रिलीज हुई फिल्म 'डंकी' में नजर आए थे। साल 2024 में शाहरुख खान की एक फिल्म रिलीज नहीं हुई।

# इस वजह से 6 साल से घर में बैठी तनुश्री

अभिनेत्री तनुश्री दत्ता इंडस्ट्री से लगभग गायब हो चुकी हैं। तनुश्री दत्ता के पास फिलहाल कोई काम नहीं। 'मीटू' के आरोप लगाने के बाद तनुश्री दत्ता को काम ही मिलना बंद हो गया। अब जाकर तनुश्री दत्ता ने अपने बर्बाद करियर को लेकर चुप्पी तोड़ी। एक इंटरव्यू में बात करते हुए तनुश्री दत्ता ने खुलासा किया है कि उनको 'मीटू' के आरोपियों ने काम देने की कोशिश की थी। ऐसे में तनुश्री दत्ता ने उनके साथ काम करने से ही इनकार कर दिया। तनुश्री दत्ता ने बताया कि साल 2018 में मेरे पास एक फिल्म का ऑफर आया था। ये फिल्म 'मीटू' के एक आरोपी के लिए बननी थी। इस फिल्म में काम करने के लिए मुझे अप्रोच किया गया, क्योंकि ये शख्स अपनी इमेज चमकाना चाहता था।

आगे तनुश्री दत्ता ने कहा कि जैसे ही मुझे इस फिल्म का ऑफर मिला वैसे ही मैंने इसे रिजेक्ट कर दिया। मैं लोगों को गलत मैसेज नहीं देना चाहती थी।

क्योंकि, उस प्रोड्यूसर पर 'मीटू' के आरोप लगे थे। हालांकि हर एक्टर को थोड़ा त्याग करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। इस बार मैं झुकने के लिए राजी नहीं थी। मैंने हाथ आए ऑफर को मना कर दिया। इस फिल्म को मना करने की वजह से मेरा बहुत नुकसान हुआ। बीते 6 महीने से मेरे पास कोई काम नहीं है। अब मैं केवल इवेंट्स का हिस्सा बनती हूं। मेरा सपना है कि मैं एक महिला सशक्तिकरण की फिल्म में अहम भूमिका निभाऊं। .

तनुश्री दत्ता ने बताया कि उस दौरान मुझे कई ऑफर मिले जिनमें मैं काम नहीं कर पाई। 'मीटू' की वजह से मुझे टारगेट किया गया। एक-एक करके मुझसे प्रोजेक्ट छीन लिए गए। इंडस्ट्री के लोगों ने जानबूझकर मेरे करियर को तबाह किया है। गौरतलब है कि साल 2018 में तनुश्री दत्ता ने नाना पाटेकर पर 'मीटू' का आरोप लगाकर सनसनी मचा दी थी। इस दौरान तनुश्री दत्ता ने नाना पाटेकर पर कई गंभीर आरोप लगाए थे।

रियल बॉक्स

# ऑस्कर की भीड़ में अकेली 'लापता लेडीस'

**हेमंत पाल**

*लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।*

भारतीय फिल्मों का इतिहास बहुत लंबा है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारतीय फिल्मों की पहचान उस लम्बाई के अनुरूप नहीं है। हर साल जब किसी भारतीय फिल्म को 'ऑस्कर' पुरस्कार में भेजे जाने की बात होती है, तो उस स्तर की एक फिल्म को खोज पाना मुश्किल होता है। यही कारण है कि किसी फिल्म को भेजा तो बहुत उत्साह और उम्मीद से है, पर अंत में हाथ कुछ नहीं लगता। अभी तक कुछ फ़िल्में अंतिम तीन में चयन तो हुई, पर उनके हाथ ऑस्कर की ट्राफी नहीं लगी। इस बार फिर इसी सकारात्मक उम्मीद से किरण राव की फिल्म 'लापता लेडीज' को ऑस्कर पुरस्कार (2025) के लिए भारत से भेजा जा रहा है। इस हल्की-फुल्की फिल्म को आधिकारिक प्रविष्टि के तौर पर चुना गया। लेकिन, 'लापता लेडीज' को ऑस्कर में भेजने की घोषणा के साथ ही विवाद भी हुआ। कहा जा रहा है कि पायल कपाड़िया की फ़िल्म 'ऑल वी इमेजिन एज लाइट' इससे ज्यादा बेहतर फिल्म है।

'लापता लेडीज' को 29 फिल्मों में से चुना गया है। 2002 में आई आमिर खान की एक्टिंग वाली फिल्म 'लगान' के बाद से अभी तक किसी भारतीय फिल्म ऑस्कर में सर्वश्रेष्ठ अंतरराष्ट्रीय फीचर फिल्म के लिए नामांकित नहीं हुई। इससे पहले दो फिल्मों ने अंतिम पांच में जगह बनायी थी, ये थी 'मदर इंडिया' और 'सलाम बॉम्बे।' अपनी अनोखी पटकथा की वजह से 'लापता लेडीज' को जिन फिल्मों में से चुना गया वे हैं हिंदी की हिट फिल्म 'एनिमल' और मलयालम की राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्म 'अट्टम' और कान फिल्म महोत्सव की विजेता 'ऑल वी इमेजिन एज लाइट' शामिल हैं। जाहनु बरुआ की अध्यक्षता वाली 13 सदस्यीय चयन समिति ने आमिर खान और किरण राव निर्मित 'लापता लेडीज' को एकेडमी अवॉर्ड्स में सर्वश्रेष्ठ अंतरराष्ट्रीय फिल्म श्रेणी के लिए 'सर्वसम्मति' से चुना। 'लापता लेडीज़' के निर्माता आमिर ख़ान हैं और उनकी प्रोडक्शन की फिल्में 'लगान' और 'तारे ज़मीन पर' पहले इस श्रेणी के लिए भेजी जा चुकी है। इसलिए उम्मीद की जा रही है कि अपने पिछले अनुभवों का उपयोग करते हुए आमिर ख़ान 'लापता लेडीज़' की ऑस्कर एंट्री को ख़ास मुकाम तक पहुंचा सकेंगे।

यह फिल्म इसी साल (2024) रिलीज हुई और इसने दर्शकों का अच्छा मनोरंजन किया। लेकिन, सवाल उठता है कि 'लापता लेडीज' की एंट्री का क्या कारण है, तो इसका जवाब जूरी के अध्यक्ष और असमी फिल्मों के डायरेक्टर जाह्नू बरूआ ने दिया। उन्होंने बताया कि जूरी इन 29 फिल्मों में ऐसी फिल्म की तलाश कर रही थी, जो हर नजरिए से भारत को ऑस्कर के जरिए दुनिया में प्रस्तुत कर सके। ऐसे में 'लापता लेडीज' इन मानकों पर पूरी तरह खरी उतरती है। भारतीयता बहुत अहम है और इसलिए 'लापता लेडीज' ही सही चयन है। उन्होंने यह भी कहा कि यह जरूरी है कि ऐसी फिल्म को ऑस्कर भेजा जाए जो विश्व पटल पर भारत को दिखाए। यही कारण है कि 29 फिल्मों में से जूरी के मेंबर्स ने सिर्फ 'लापता लेडीज' पर ही मुहर लगाई। उन्होंने यह भी बताया कि चेन्नई में इन सभी फिल्मों को एक हफ्ते में देखा गया। इस पूरे हफ्ते हमने फिल्मों पर चर्चा की। इसके बाद इनका हर तरह से विश्लेषण कर शॉर्टलिस्ट किया। कौन सी फिल्म ऑस्कर में भेजी जाए इस चर्चा के लिए आधा दिन और लगा, फिर 'लापता लेडीज' को अंतिम रूप से चुन लिया गया। यह भी कहा कि उन पर और उनकी टीम पर किसी तरह का कोई दबाव नहीं था।

यह फिल्म दो दुल्हनों फूल और जया पर केंद्रित सोशल ड्रामा है। इसके कथानक में दिखाया गया कि कैसे कम उम्र में लड़कियों की शादी करके उन्हें घर की चारदीवारी में जिम्मेदारियों के साथ बंद कर दिया जाता है। फिल्म में एक लड़की जो पढ़ना चाहती है वो शादी के खिलाफ होती है। फिर भी उसकी जबरन शादी कर दी जाती है। जब वह विदा होकर ट्रेन से ससुराल जाती है, तो उसे ट्रेन के डिब्बे में एक और दुल्हन मिलती हैं। दोनों ने नाक तक घूंघट डाला होता है। उनका यह घूंघट दुल्हनों की वास्तविकता के साथ एक भारतीय सामाजिक संस्कार भी है। घूंघट और ट्रेन से उतरने की हड़बड़ी में ये दोनों दुल्हनें अपने दूल्हों से बदल जाती हैं। इस नाटकीयता पर हंसी तो आती है, लेकिन कहानी के आगे बढ़ने पर स्थिति की जटिलता भी समझ आती है। कहानी के साथ एकाकार होकर दर्शक भी किरदारों के साथ चिंतित होते हैं कि फूल और जया कैसे सही ठिकानों तक पहुंचेगी। उनके साथ कुछ अप्रिय होने का खतरा भी होता है। फूल और जया की परिस्थितियां

अलग होने के बावजूद एक जैसी हैं। क्योंकि, दोनों का वर्तमान अनिश्चित होता है। फूल अपनी सादगी और जया अपनी होशियारी के बावजूद पुरुष प्रधान समाज के बुने जाल में फंस जाती है। दोनों के पति स्वभाव में अलग है। दीपक सोच में प्रगतिशील है, लेकिन प्रदीप रूढ़िवादी और पुरुषवादी सोच रखता है। फूल, जया, दीपक और प्रदीप इन सभी किरदारों के ताने-बाने में महिलाओं की अस्मिता, पहचान और प्रतिष्ठा के सवाल सामने आते हैं। निर्देशक किरण राव ने इसे बेहद सरल तरीके से सुलझाया है।

इसी साल 1 मार्च को रिलीज हुई इस फिल्म की शुरुआत काफी धीमी रही। लेकिन सकारात्मक समीक्षाओं और माउथ पब्लिसिटी ने फिल्म को आगे बढ़ाया और यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कुछ गति पकड़ने में सफल रही। फिल्म ने शुरुआती सप्ताह में लगभग 4 करोड़ रुपए कमाए। रिलीज के 50 दिनों के बाद 'लापता लेडीज' का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 17.31 करोड़ रुपए रहा। 8 हफ्ते बाद यह फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म पर आ गई। किरण राव द्वारा निर्देशित इस फिल्म को आमिर खान और ज्योति देशपांडे ने बनाया है। यह फिल्म आमिर खान प्रोडक्शंस और किंडलिंग प्रोडक्शंस के बैनर तले बनाई गई। इसकी पटकथा बिप्लब गोस्वामी की एक पुरस्कृत कहानी पर आधारित है। पटकथा और संवाद स्नेहा देसाई ने लिखे हैं, जबकि अतिरिक्त संवाद दिव्य निधि शर्मा ने लिखे हैं।

1956 में जब से 'बेस्ट फॉरेन लेंग्वेज कैटेगरी' वाली फिल्मों को अवार्ड देने की शुरुआत की गई, तभी से भारत का रिकॉर्ड ख़राब रहा। भारत से भेजी जाने वाली फ़िल्में हमेशा विवादों से घिरी रही। सीधे शब्दों में कहा जाए तो हम अभी तक समझ ही नहीं सके कि ऑस्कर पाने वाली फ़िल्में कैसी होती है! हमारे यहां कभी राजनीतिक कारणों से तो कभी किसी को खुश करने के लिए फिल्मों का चयन किया जाता रहा है। इसका सटीक उदाहरण है 1996 में इंडियन, 1998 में 'जींस' और 2019 फिल्म 'गली बॉय' को इस कैटेगरी में भारत से भेजा जाना है। क्या इन फिल्मों का स्तर इस लायक था कि इन्हें ऑस्कर में भेजा गया ये आज भी रहस्य है कि इन फिल्मों को क्यों चुना गया था! 2007 में भी 'एकलव्य ः द रॉयल गार्ड' फिल्म को लेकर भारी बवाल मचा था। जब 'बर्फी' फिल्म का चुनाव ऑस्कर के लिए किया गया, तब भी बहुत हल्ला मचा। 'बर्फी' के बारे में कहा गया था कि इस फिल्म के कई सीन विदेशी फिल्मों की साफ-साफ़ नक़ल है। 'न्यूटन' फिल्म पर आरोप लगे थे कि कि ये एक ईरानी फिल्म 'सीक्रेट बैलट' की नक़ल है। लेकिन, जब भी हमने अच्छी फिल्में भेजीं, ऑस्कर ने उन्हें ठुकराया भी है। न्यूटन, विसरनई, कोर्ट, विलेज रॉकस्टार्स के अलावा 'रंग दे बसंती' (2006), 'बैंडिट क्वीन' (1994) से लेकर 'गाइड' (1965) और अपू ट्राईलॉजी की तीसरी फिल्म द वर्ल्ड ऑफ अपू' (1959) तक ऐसा कई-कई बार होता रहा! फिर आखिर चूक कहां होती है, ये ऐसा सवाल है जिसका जवाब खोजा जाना है!

अभी तक भेजी जाने वाली भारतीय फिल्मों में केवल तीन बार हमारी फिल्में ऑस्कर के अंतिम पांच दावेदारों में जगह बना सकी! मदर इंडिया (1957), सलाम बॉम्बे (1988) और लगान (2001) ही वे भाग्यशाली फ़िल्में रही, जो अंतिम पांच तक पहुंची पर जीत नहीं सकी। आजतक किसी भारतीय फिल्म ने ऑस्कर नहीं जीता! केवल 'गांधी' (1982) और 'स्लमडॉग मिलिनेयर' (2008) जैसी दो विदेशी फिल्मों के लिए भानु अथैया, गुलजार, एआर रहमान और रसूल पुकुट्टी जैसे लोगों को अलग-अलग विधाओं में ऑस्कर से नवाजा जरूर गया। इसके अलावा सत्यजीत रे को 1992 में ऑस्कर का 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' दिया गया। लेकिन, जो सम्मान किसी भारतीय फिल्म को मिलना चाहिए, उससे अभी भारतीय फिल्मकार अछूते हैं।

ऑस्कर में भारत की सबसे सशक्त दावेदारी आशुतोष गोवारिकर की 'लगान' की रही। उस साल ये फिल्म ऑस्कर जीतते-जीतते रह गई। कोई भारतीय फिल्म इस कैटेगरी में अवार्ड नहीं जीत पाया! इसके पीछे क्या हमारी चयन प्रक्रिया में खोट है! क्या किसी खास मूड की फिल्म का ही चयन किया जाता रहा है! यदि ऐसा नहीं है, तो क्या फिर फिल्म के चयन में कोई पक्षपात किया जाता है! इन सवालों का जवाब शायद किसी के पास नहीं मिलेगा! 'लगान' से पहले 'मदर इंडिया' और 'सलाम बॉम्बे' का चयन भी इसी कैटेगरी के लिए हुआ था। लेकिन, एनवक्त पर ये फ़िल्में बाहर हो गई! भारत की तरफ से भेजी गई पहली फिल्म 'मदर इंडिया' को नामांकन मिला। यह फिल्म विधवा औरत की मुसीबत, गरीबी में अपने दो बच्चों का पालन करने वाली पीड़ित भारतीय नारी की परिभाषा तय करती हैं। अपनी बेहतरीन अदाकारी से नरगिस ने राधा की इस भूमिका में जान डाल दी थी। अपनी अदाकारी के लिए नरगिस को तब 'कार्लोवी वेरी इंटरनेशनल फ़िल्म फेस्टिवल' में भी 'बेस्ट एक्ट्रेस' का अवॉर्ड मिला था। लेकिन, यह फ़िल्म 'ऑस्कर' से वंचित रही।

*- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919*

# सिनेमा में भी गूंजा है जय माता का जयकारा

अशोक जोशी

**इन दिनों पूरे देश में जय माता के जयकारे गूंज रहे है। नौ दिवसीय नवरात्रि के आगमन से त्योहारों का सिलसिला आरंभ हो गया। घर घर में माता रानी पधारी हैं। हमारी संस्कृति में मां का स्थान सर्वोपरि है। यही कारण है कि हमारे यहां**

**मां को अलग अलग स्वरूप में पूजा जाता है। जो मां पूरे समाज और संस्कृति का अटूट हिस्सा हो,वह फिल्मों से कैसे दूर रह सकती है। यूं तो हर फिल्म में मां किसी न किसी रूप में दिखाई जाती है। लेकिन, कुछ फिल्में ऐसी हैं जो मातृ शक्ति को पर्दे पर शिद्दत के साथ पेश करती है। हिंदी सिनेमा में कुछ ऐसी फिल्में हैं जिन्होने मां का कद ऊंचा किया।**

बात जब महिला.केंद्रित फिल्मों की आती है, तो सबसे पहले 'मदर इंडिया' का नाम जेहन में आता है। यह देश की आजादी के बाद की कहानी है जिसमें एक गरीबी से त्रस्त राधा अपने पति की गैर.मौजूदगी में अपने बच्चों की परवरिश के लिए संघर्ष करती है। सुचित्रा सेन,अशोक कुमार और धर्मेंद्र अभिनीत हिंदी फिल्म 'ममता' उस युवती की कहानी है, जो अपनी उस माँ के तलाश में है जिसने उसके बेहतर जीवन के लिए अपने सपनों और अभिलाषाओं का त्याग कर दिया था। फिल्म का निर्देशन असित सेन ने किया था। इंद्र कुमार की निर्देशित फिल्म 'बेटा' उस सौतेली माँ बेटे की कहानी है, जिसमें बेटा अपनी सौतेली माँ से बिना शर्त प्यार करता है। जबकि, माँ उसकी सरलता का फायदा उठाकर उसकी सम्पत्ति हथियाने के उपाय करती रहती है।

सलमान खान और शाहरुख खान अभिनीत 'करण अर्जुन' माँ-बेटों के बीच प्यार की बड़ी खूबसूरत कहानी है। संपत्ति की लालच में मार दिए गए अपने दोनों बेटों के फिर से लौटने के इंतजार में बैठी माँ को आखिरकार उसके बेटे दूसरे जन्म में वापस मिल जाते हैं। फिल्म में माँ की ममता के विश्वास की दृढ़ता और उसकी वजह से असंभव के भी संभव बनने का संदेश दिया गया है। फिल्म को राकेश रोशन ने निर्देशित किया था।

फिल्म निर्देशक मधुर भंडारकर की दिल को छू जाने वाली फिल्म 'चांदनी बार' एक ऐसे सेक्स वर्कर की कहानी है जो अपने बच्चों को बेहतर जिंदगी देने के लिए संघर्ष करती है और उन्हे वेश्यावृत्ति की दुनिया से दूर रखना चाहती है। इस फिल्म में सेक्स वर्कर का

किरदार तब्बू ने निभाया है। इसके लिए उन्हे सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। प्रीती जिंटा अभिनीत 'क्या कहना' उस अविवाहित माँ की कहानी है, जो शादी से पहले अपने बच्चे को जन्म देने के लिए अपने प्रेमी और अपने परिवार तक को छोड़ देती है।

इसी तरह 'ज़ख्म' दंगों में जला दी गई एक मुस्लिम माँ की कहानी है। फिल्म की कहानी एक मुस्लिम माँ के उस हिंदू बेटे के इर्द.गिर्द घूमती है, जो अपनी माँ की आखिरी इच्छा पूरी करने के लिए मरने के बाद उसे सम्मान के साथ दफ़न करने का फैसला करता है। फिल्म की कहानी बताती है कि कैसे एक माँ अपने बच्चे और अपने प्यार के लिए आदर्श बनने के लिए अपनी आस्था छोड़ देती है। महेश भट्ट द्वारा निर्देशित यह फिल्म उनके खुद के जीवन के काफी करीब बताई जाती है।

महाश्वेता देवी के लिखे बंगाली उपन्यास पर आधारित गोविंद निहलानी के निर्देशन में बनी 'हजार चौरासी की माँ' उस माँ की कहानी है जो नक्सली विचारों से प्रेरित अपने बेटे को

एक पुलिस मुठभेड़ में खो देती है। उसके शव के नंबर 1084 की वजह से उसे 'हजार चौरासी की माँ' कहा जाता है। फिल्म में जया बच्चन और अनुपम खेर मुख्य भूमिका में हैं। इस फिल्म को सर्वश्रेष्ठ हिंदी फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला था। 2003 में आई 'तहज़ीब' माँ शबाना आज़मी और बेटी उर्मिला मातोंडकर के बीच के खट्टे-मीठे रिश्ते पर आधारित कहानी है। इसे खालिद मोहम्मद ने निर्देशित किया था।

'निल बटे सन्नाटा' एक ऐसी वंचित लेकिन सशक्त महिला की कहानी है जो अपनी बेटी के लिए बड़े.बड़े सपने देखती है। 'निल बटे सन्नाटा' के देशज मुहावरे के नाम से बनी यह फिल्म उन लोगों को सफलता के प्रति प्रेरित करती है जो साधनहीन और गरीब तबके से आते है। इसके अलावा पर्दे पर कभी त्रिशूल में तो कभी दीवार में मां के सशक्त चरित्र को पेश किया गया है। 'मां' शीर्षक से बनी फिल्मों में मां, मां की ममता, माँ बहन और बीबी, सौतेली माँ, ममता की छांव में प्रमुख है। जहां तक धार्मिक फिल्मों की बात की जाए तो वहां देवियों पर बनने वाली अधिकांश फिल्मों के शीर्षक में आगे या पीछे मां अनिवार्य रूप से जुडी होती है। ऐसें 'जय संतोषी मां' की याद आना स्वाभाविक है जिसने 1975 में अपने सामने प्रदर्शित अब तक की सबसे बडी हिट माने जाने वाली फिल्म शोले को भी कमाई के मामले में पीछे छोड दिया था।

मां पर आधारित फिल्मों के अलावा हिन्दी सिनेमा के गीतों में भी मां शब्द का भरपूर इस्तेमाल किया गया है। ऐसे गीतों में चलो चलें माँ सपनों के गाँव में, आज मुझे मेरी माँ ने बेटा कह के बुलाया है, माँ ही गंगा माँ ही जमुना माँ ही तीरथ धाम, माँ का सर पर हाथ जो तेरे क्या ईश्वर का काम, माँ मुझे अपने आँचल में छुपा ले, माई री माई कासे कहूँ पीर अपने जिया की, मैंने माँ को देखा है माँ का प्यार नहीं देखा, मेरी दुनिया है माँ तेरे आँचल में, मेरी राहों के दिए तेरी दो अँखियाँ, तेरी ऊँगली पकड़ के चला ममता के आँचल में पला, माँ ओ मेरी माँ, मां तू कितनी अच्छी है, तू कितनी भोली है, प्यारी-प्यारी है, तुझे सब है पता है न माँ जैसे गीतों ने मां की महिमा को मंडित किया है।

# हंसोऽऽ...हंसोऽऽ... समझ नहीं आ रहा !

प्रकाश पुरोहित

कुछ साल पहले 'इंडिया-टुडे' में **गुलजार की** किसी नई किताब की रिव्यू पर सरसरी नजर मारते, आखिर की कुछ लाइन पढ़ीं **''यदि गुलज़ार अपने कवच से बाहर निकल आएं तो हो सकता है साहित्य में भी उनकी जगह बन जाए।''** ये लाइन चौंकाने वाली थी, क्योंकि गुलज़ार को तो कुछ नादान, साहित्यकार बनाए ही दे रहे थे। उनका चाल-चलन भी साहित्यकारों वाला ही हो चला था, लेकिन हकीकत उन्हें भी पता थी और इसीलिए दबी जुबान में शिकायत भी रही है कि साहित्य में उन्हें जगह नहीं दी जा रही है। वैसे तो लोग बोलने की भी हिम्मत नहीं करते हैं, लेकिन ये बंदा है, जो साफ-साफ लिख रहा है कि अभी साहित्य में गुलजार का जिक्र नहीं है। रिव्यू में लेखक का नाम देखा, **सलमान अख्तर** और परिचय में बताया गया कि अमेरिका में प्रोफेसर हैं और शायर भी। बस, इससे ज्यादा कुछ नहीं!

तलाश रहने लगी उनकी, और एक रोज क्या देखता हूं कि लल्लन टॉप के सौरव द्विवेदी के यहां सलमान अख्तर बैठक जमाए हैं। उस दौरान यह जाना कि शायर जां निसार अख्तर के साहबजादे हैं और फिल्मी लेखक जावेद अख्तर के भाई हैं। जावेद अख्तर को गुलजार से वही शिकायत रही, जो गुलजार को हिंदी वालों से है, यानी जावेद का नाम गुलजार के पसंदीदा गीतकारों में नहीं था। बाद में कहीं समारोह में गुलजार ने उन्हें गले लगाते ऐसा कह भी दिया था। यानी मिल जाए तो बढ़िया गीतकार क्या, कुछ भी कह सकते हैं गुलजार! तब यह भी जाना कि सलमान अख्तर और जावेद में ना जाने किस बात पर अबोला है और यह भी कि दोनों एक-

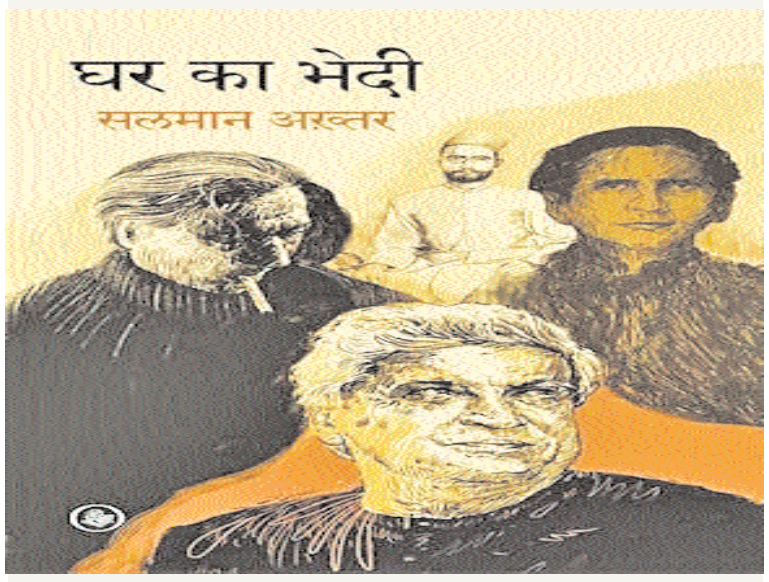


दूसरे के काम पर नजर भी रखते रहते हैं, अच्छे या बुरे! सलमान अख्तर की यही खूबी, यानी मन का बोलने की, यहां भी नजर आई थी। भाई के कुछ लिखे को अच्छा बताते हैं और उनका जिक्र भी करते हैं, लेकिन पायेदार नहीं मानते।

अभी हफ्ते भर पहले फिर नमूदार हुए हैं सलमान अख्तर, अपनी दो किताबों के साथ, जिनमें एक तो 'घर का भेदी' है और यह कहा जा रहा है कि घर-परिवार और खुद के रहस्य और बातें भी उजागर की हैं। लिखते कैसा हैं, यह तो उनकी साठ से ज्यादा किताबों से पता चल सकता है, लेकिन बोलते कमाल का हैं। जब उनसे यह पूछा गया कि धर्म और अध्यात्म पर उनका क्या सोचना है तो उनका जवाब था 'ये दोनों मेरे लिए मैक्सिको की तरह हैं, इसलिए कि मैं जाना तो चाहता हूं मैक्सिको, लेकिन डर यही है कि वहां का होकर ना रह जाऊं।' धर्म के अधकचरे ज्ञान यानी जानकारी पर सलमान अख्तर किसी को नहीं बख्शते और धर्म के ठेकेदारों के खिलाफ खुलकर बोलते हैं।

पिता के बारे में बताते हैं कि धर्म के खिलाफ बोलने में उन्हें कोई दिक्कत नहीं होती थी। हमारे दादा पक्के नमाजी थे और मां तो मुस्लिम होते हुए भी अंदर से कहीं हिंदू थीं। माथे पर बड़ी-सी गोल लाल बिंदी लगाती थीं और कुछ देवताओं की मूर्ति और चित्र भी रखती थीं। इन सभी ने मिल कर मुझे कहीं का नहीं रखा और मैं नास्तिक हो गया हूं। खुदा, भगवान या ईश्वर पर मेरा भरोसा नहीं है। बेबाक बयानी ही उनकी ताकत है कि गुलजार हो या अपना भाई, रियायत नहीं बापरते। यहां तक कि पिता के बारे में कहते हैं कि शायर तो बहुत ही बड़े थे, काश बाप भी अच्छे ही होते, बहुत बुरे बाप थे!

पिता जां निसार अख्तर का किस्सा सुनाते हैं कि महफिल में बेगम अख्तर गा रही थीं, तभी पिताजी वहां पहुंच गए। बेगम अख्तर ने उन्हें देखा और याद आया कि इनकी कोई गजल नहीं गाई है अब तक! उनके पास गजल थी भी नहीं! किसी से कान में कहा कि किसी बहाने से ऊपर जाऊंगी और तुम वहां जा निसार अख्तर शायरी की किताब रख देना। पांच मिनट में तीन शेर याद कर लूंगी और गा दूंगी, क्योंकि मैंने अभी तक इनकी कोई गजल नहीं गाई है। मेजबान ने अख्तर साहब पूछा कि आपकी कोई किताब यहां है और पूरी बात बता दी! तब उन्होंने कहा 'अगर पांच मिनट में तीन शेर याद कर सकती हैं तो फिर मैं नए शेर लिखे देता हूं' और उन्होंने वहीं पूरी गजल लिख दी और कमाल यह कि बेगम अख्तर ने गा भी दी। बोल थे **'सुबह के दर्द को, रातों की जलन को भूलें, किसके घर जाएं कि उस वादा शिकन को भूलें।'** यही अकेली गजल है, जो बेगम ने गाई है!

सलमान अख्तर

इस बार लल्लन टॉप की बैठकी में सलमान अख्तर अलग ही तरह से रूबरू हुए कि उनकी सपनों में गहरी दिलचस्पी है। अमेरिका में मनोविज्ञान पढ़ाते हैं और दुनिया भर में उनके लेक्चर होते हैं। सवाल हुआ कि **कुछ लोगों को सपने नहीं आते हैं, ऐसा क्यों?** जवाब था कि नींद के पहरेदार हैं सपने। जैसे ही सपने हटते हैं, हमारी नींद खुल जाती है। हम रात भर में कई सपने देखते हैं। हर सपने की उम्र दस से बीस मिनट की ही होती है। जो आखिरी का होता है, वही हमें याद रह जाता है। यह कहना ठीक नहीं है कि कुछ लोगों को सपने नहीं आते हैं। दरअसल, सपने तो उन्हें भी आते हैं, लेकिन याद नहीं रहते हैं और इसलिए कहते हैं कि मुझे सपने नहीं आते।

बताते हैं, आमतौर पर दस किस्म के ही सपने होते हैं, जो दुनिया का हर शख्स देखता है। मुझे इतने बरस हो गए पढ़ाते हुए, लेकिन आज भी यह सपना मेरा पीछा नहीं छोड़ता कि एक्जाम में देर हो गई या कलम ले जाना भूल गया या पर्चा दूसरा आ गया। ऊपर से गिरने का भी सपना हर कोई देखता ही है। रेल, बस या फ्लाइट चूकना भी आम सपना है। पानी में डूबने का सपना तो तैराक को भी आ सकता है। कार चलाते हुए ब्रेक नहीं लग रहा है या कार पीछे लुढ़क रही है, ऐसे सपने कामन हैं और दुनिया में सभी को आते हैं।

**'क्या सुबह के सपने सच होते हैं?'** सलमान अख्तर का कहना था 'यह बात मुझे नई मालूम चली है तो इस बारे में कुछ नहीं कह सकता हूं, लेकिन ऐसी सोच सिर्फ भारत में ही है, इसलिए नहीं लगता कि ऐसा होता होगा।' उनका यह भी कहना है कि 'सपने में सभी इन्द्रियां काम करती हैं, बस, गंध नहीं आती है। बच्चा अपनी मां को आठ माह बाद पहचानता है, लेकिन जन्म के सात दिन बाद सिर्फ दूध की गंध पहचानता है।' **'क्या बिना शर्त प्यार होता है...?'** इस पर कहते हैं 'हां, मां और बच्चे के बीच, सिर्फ आठ माह तक, उसके बाद जैसे ही बच्चा घुटनों के बल चलने लगता है, उस पर शर्तें लागू हो जाती हैं, इधर नहीं जाना, उधर नहीं जाना और इस तरह की और ना जाने कितनी शर्तें बढ़ती जाती हैं!

मन करे तो सलमान अख्तर के कुछ वीडियो यू-ट्यूब पर हैं, सबूत के लिए देख सकते हैं, रोचक तो दो साल पहले का लल्लन टॉप वाला है। टॉप का है। पढ़ने का शौक अभी बाकी है तो उनकी किताब 'घर का भेदी' पढ़ सकते हैं!

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

# 'जिया जले': गुलजार के गीतों और उनकी कहानियां

दे खिए, अब पूरी किताब के सारे गानों पे बात करूंगी तो आपके लिये पढ़ने को क्या रह जाएगा? चलिए चुनिंदा गानों पर बात करें। पहले इस पुस्तक में जो गाने जिक्र होने से रह गये वो बता दूँ। 'हमने देखी है इन आंखों की महकती खुशबू', 'मन रे तू काहे ना धीर धरे', 'ये रात ये चांदनी फिर कहां', 'ओ सजना बरखा बहार', 'जब तुम चले परदेस' (ये ऐसे गाने हैं जो कुछ दूसरे शायरों ने लिखे हैं उनकी कहानी भी गुलज़ार साहब ने बताई है) फिर आता है उनका पहला गीत 'मोरा गोरा रंग लई ले', फिल्?म 'रावण' का 'ठोंक दे किल्ली' । फिर एक चर्चा है हिंदी उर्दू के शब्दों के इस्तेमाल पर। 'वो शाम कुछ अजीब थी' (खामोशी), 'जय हो' (ऑस्कर अवॉर्ड विनर), 'मेरा कुछ सामान' जो गीत कम कहानी जैसा है। 'दिल ढूंढता है फिर वही फुरसत के रात दिन' किसके दिल में नहीं उतरता? 'वक्त' लफ़्ज पर गुलज़ार साहब की बहुत कविताएं व गाने हैं। 'आने वाला पल जाने वाला है।' गुलज़ार साहब ने 'जब प्यार किया तो डरना क्या (मुगले आजम) पर भी बात की है। 'राकेश मेहरा के गाने 'लिप सिंग' गाने नहीं होते। बैकग्राउंड होते हैं। उनके लिए गुलज़ार साहब ने अलग तरीके से लिखा जैसे ''रंग दे बसंती'' का गीत। 'मर्जिया' में राजस्थानी लोकगीत, शादी ब्याह का संगीत 'कजरारे', 'हमको मन की शक्ति देना' (गुड्डी), 'घरौंदा' का स्क्रीन प्ले, 'मीरा' मेरी पसंदीदा फिल्म के गीत की भी कहानी है, 'आमी' के गीत। मेघना उन्हें एक निर्देशक लगती है जो आराम से उनके गाने ठुकरा देती थी। 'फिलहाल', 'तलवार', 'राजी' वगैरह उनकी फिल्में है। 'गालिब' की स्क्रिप्ट और उनकी शायरी किस कदर सीरियल देखती आम जनता भी गालिब से जुड़ गई। उन्होंने शांतनु मोइत्रा के गीतों पर बात की। फिर उन्होंने बहुत से संगीतकारों का जिक्र किया। विशाल भारद्वाज की फिल्म 'रंगून', 'मटरू की बिजली का मंडोला' पर बहुत खूब गाने लिखे गए। उनकी अपनी फिल्म 'हू तू तू', 'माचिस' राजनीति आतंकवाद से जुड़ी है पर शब्द बिल्कुल कोमल है कठोर नहीं।

'यारा सीली सीली' पर भी बात करना जरूरी है। साउथ की फिल्मों से उनका काफी ताल्लुक रहा खासतौर से 'ऐ जिंदगी गले लगा ले' वाली 'सदमा' फिल्म से। फिर नए जवान गायकों के साथ काम करना। 'प्लूटो', 'अंतरिक्ष' पर कहीं गई बात है, जो एक शायर के लिए अजीब विषय लगता है।

जगजीत और भूपेंद्र के बिना उनकी बात अधूरी से लगती। 'गुरु' फिल्म के 'ओ हमदम तेरे बिना क्या जीना' की कहानी भी दिलचस्प है। एक बार एक लाइन के बाद धुन पर गाना लिखा गया। फिल्म थी 'मासूम'। यूनुस खान (अनुवादक) की बात भी सुनने, पढ़ने लायक है। चलिये इन्हीं गानों में से दो तीन गीतों की कहानियां पढ़ते हैं। अब ये बात सब जानते हैं कि शैलेंद्र ने गुलजार साहब को बिमल रॉय के लिए पहले गाना लिखने को प्रेरित किया गाना था, 'मोरा गोरा रंग लई लै।' नसरीन पूछती है कि ले ले की बजाय 'लई लै' क्यों, 'जला ले' की जगह 'जलई लै' क्यों? गुलज़ार साहब कहते हैं (सोचिए पूरी फिल्म की कहानी के अनुसार लिखते हैं) उत्तर भारत में गांवों में इसी तरह लोग बात करते हैं और अवधी में ये गाना लिखा गया। फिर नसरीन पूछती है मणिरत्नम का गाना फिल्माने का तरीका आपको पसंद है। ''कमाल का है'', गुलज़ार कहते हैं ''मैंने 'रावण' में उनकी ''ठोक दे किल्ली'' इसलिये लिखा कि उनका किरदार ''रावण'' एक रॉबिन हुड की तरह है जो बागी तेवर रखता है। ये लाइन मैंने पंजाब से ली है जहाँ कहा जाता है ''चक दे फट्टे, ठोंक दे गिल्ली, अज्ज जलंधर ते कल दिल्ली।''

भाषाओं और भावनाओं के धनी भाषा पर भी बात करते हैं। हिंदी और उर्दू दो बहनें हैं और दोनों की अपनी-अपनी खूबसूरती है पर उर्दू में ऐसा क्या है जो दिल के करीब ले आता है। गुलजार कहते हैं मेरे लिये उर्दू एक शाही मौजूदगी है- ये एक तहज़ीब वाली ज़बान है। मेरी नज़्म में इक लाइन है 'फकीरी में नवाबी का मजा देती है उर्दू।' उर्दू हिंदुस्तानी बाजन है। भारत की कई बोलियों और भाषाओं से मिलकर बनी है जैसे अवधी, भोजपुरी और पूरबी।

नसरीन कहती है, ''छैयाँ छैयाँ में आपने लिखा 'जिसकी जुबाँ उर्दू की तरह'। छैयां तो छांव से निकला ख़ालिस हिंदी शब्द है। गुलज़ार साहब कहते हैं, जैसे 'बांसुरी बज रही है कदम की छैयाँ।' सन् 2009 में स्लमडॉग मिलेनियर के लिए दो ऑस्कर जीते 'जय हो' के लिये उन्हें बेस्ट लिरिक्स के लिये अवार्ड मिला पर उनके पास ब्लैक जैकेट नहीं था। इसमें गुलज़ार साहब सुखविंदर की आवाज, ए.आर. रहमान को क्रेडिट देते हैं और लिरिक्स यूं थे-

आजा आजा जिंद-शामियाने के तले
आजा जरीवाले नीले आसमाँ के तले
जय हो जय हो।

नसरीन रहती है 'इस दास्तान जैसे गाने को प्रसिद्ध भी मिली और आलोचना भी 'मेरा कुछ सामान तुम्हारे पास पड़ा है।'

गुलजार हंसते हुए कहते हैं, पंचम इसे मेरा लगेज वाला गाना कहता था दरअसल यह गाना एक रिश्ता टूटने की बात कहता है। इस गाने पर 1988 में सर्वश्रेष्ठ गायिका और सर्वश्रेष्ठ गीतकार का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था। नसरीन ने पूछा आप गीतकार संगीतकार के रिश्ते के बारे में क्या कहना चाहेंगे?

गुलज़ार- ये एक दूसरे पर टिका रिश्ता है संगीतकार बैचेन रहता है उसकी धुन पर गीतकार की क्या प्रतिक्रिया होगी।

नसरीन - क्या मदनमोहन के साथ काम करना आसान था?

गुलज़ार - आसान? वो धुन गाकर सुनते थे फिर थोड़े दिन में वो धुन बदल जाती थी। 'दिल ढूंढता है फिर वही दरअसल ग़ालिब की लाइन है -जी ढूंढता है। मदनमोहन ने उसे दिल कर दिया मैंने कहा आप गालिब के अल्फ़ाज नहीं बदल सकते। दोनों अपने-अपने 'दीवान ऐ ग़ालिब' लाये। एक में 'जी' था। एक में 'दिल' धुन पर दिल सही बैठता था वही गाने में लिया गया। पहले के गीतकार, संगीतकार, सिंगर, निर्देशक सब शामिल होते थे लोगों को शायरी की बहुत समझ थी।

नसरीन - राकेश मेहरा के साथ काम करने में कैसा लगा?

गुलज़ार - उन्हें इस बात की समझ थी कि गीत संगीत मिलकर कैसा असर कायम करेंगे।

फिर बात हुई द फेमस 'कजरारे' गाने की जिसके बिना कोई शादी पूरी नहीं होती। 2005 में 'बंटी बबली' के लिए लिखा गया अद्भुत गाना था जिसमें अंग्रेजी शब्दों का इस्तेमाल था- 'आंखें भी कमाल करती है, पर्सनल से सवाल करती हैं'।

शंकर, अहसान, लोय के संगीत की गज़ब मिसाल थीं। अलीशा चिनॉय, शंकर महादेवन, जावेद अली ने इसे गाया। 'साथिया' फिल्म के सभी गाने गुलज़ार साहब, ए.आर. रहमान के जोड़ी ने दिये। धुन पर शंकर पहले कमी लिखते हैं जो काफी मज़ेदार होते हैं- 'तू दिल मेरा ले जा, मैं चप्पल पहन के आई।'

कजरारे में भी डमी वर्ड थे और धुन थीं। उन्होंने कहा गुलज़ार साहब डमी वर्ड बदल दीजिये पर कजरारे मत बदलियेगा। गुलज़ार ये भी मानते हैं कि ये गाना ऐश्वर्या के डांस की वजह से सुपरहिट हुआ।

मैं इतनी आसानी से बात ख़त्म नहीं कर सकती इसलिए ये तीसरी भाग में भी जारी रहेगा। तब तक सोचते रहिये और क्या रहेगी गुलज़ार साहब की ज़िंदगी...।

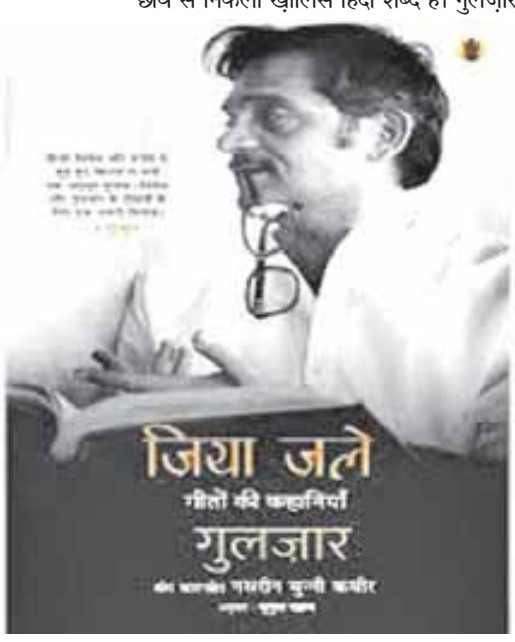


## विडंबना...

फोटो और विवरण-बंसीलाल परमार

मैं जानता हूं कि जीवन विरोधाभासों से भरा हुआ है। मगर कुछ विरोधाभास फांस की तरह चुभते हैं। महसूस होता है कि ये ऐसी फांस बन कर क्यों कायम हैं, जिन्हें हम न निकाल सकते हैं और न बदलने की दिशा में प्रयत्न हो सकते हैं? यह दृश्य दक्षिण भारत का है। दक्षिण भारत में भव्य मंदिर बेहिसाब जमीनों पर फैले हुए हैं। जितनी उनकी जमीन है उतनी ही बेहिसाब उनकी आय है। मंदिरों में दर्शन, शीघ्र दर्शन, अतिशीघ्र दर्शन तथा वीआईपी टिकट जैसी व्यवस्था पृथक-पृथक रेट पर उपलब्ध है। यह भी उनकी आय में अकूत वृद्धि करते हैं।

मगर इस समृद्धि के समानांतर दूसरी तस्वीर यह है। दक्षिण भारत में सरकारी स्कूल की दशा घुड़साल से बदतर दिखाई देती है। अंदर तो ठीक बाहर भी स्थिति अकथनीय बुरी है। ऐसी की बच्चों का स्कूल तक आना कठिन है। मेरी फांस यह है कि स्कूलों की ऐसी दशा से किसी की आस्था विचलित नहीं होती है। यह चित्र विजयवाड़ा से मलिकार्जुन के रास्ते के किसी कस्बे का है। मलिकार्जुन मंदिर के बाहर भव्य सरस्वती जी की प्रतिमा है वहां लोग सेल्फी लेते हैं और मैंने गाड़ी से गुजरते हुए विद्या के मंदिर की यह फोटो ली। इस उम्मीद में कि शायद उसमें पढ़ने वाली सरस्वती की दशा पर कभी किसी का ध्यान जाए।

खुला खत

❐ डॉ. सत्यकांत त्रिवेदी

वरिष्ठ मनोचिकित्सक एवं स्तंभकार

# राष्ट्रनायक क्रिकेट खिलाड़ियों से यह उम्मीद तो नहीं

भारत में क्रिकेटर्स सिर्फ खेल के नायक नहीं हैं, वे समाज के आदर्श भी हैं। उनकी लोकप्रियता हर उम्र और वर्ग के लोगों में होती है, और उनके द्वारा किए गए विज्ञापनों का गहरा प्रभाव पड़ता है। जब ये नायक ऑनलाइन सट्टेबाजी से जुड़े प्लेटफॉर्म का प्रचार करते हैं, तो युवाओं पर इसका विशेष रूप से नकारात्मक असर होता है।

अध्ययन बताते हैं कि सट्टेबाजी की लत अवसाद, चिंता और वित्तीय संकट जैसी समस्याएं पैदा करती है। ऑनलाइन गेमिंग और सट्टेबाजी के बढ़ते चलन से खासकर युवाओं में मानसिक तनाव और असुरक्षा बढ़ रही है, जिससे उनके भविष्य पर भी असर पड़ता है।

मैं भारत बांग्लादेश टी20 मैच अपने राष्ट्रनायकों को जीवंत खेलता देखने का मन बना रहा हूं।खेल का जादू और जुनून देश के हर कोने में बसा हुआ है, लेकिन इस अद्भुत खेल के नायकों से मेरा आग्रह है कि वे अपने प्रचार के माध्यम से समाज में ऐसे संदेश देने से परहेज करें। खासकर सट्टेबाजी जैसे गंभीर मुद्दे से दूर रहें और युवाओं के आदर्श बने रहें।

क्रिकेटर्स को इस गंभीर मुद्दे को समझना चाहिए और ऐसे विज्ञापनों से दूरी बनानी चाहिए जो सट्टेबाजी को बढ़ावा देते हैं। उनकी नैतिक जिम्मेदारी है कि वे समाज में सकारात्मक संदेश दें और युवाओं को सही दिशा में प्रेरित करें।

खेल का उद्देश्य मनोरंजन के साथ समाज को मजबूत बनाना है, न कि उसे आर्थिक और नैतिक रूप से कमजोर करना। क्रिकेटर्स को अपने प्रचार के चुनाव में सावधानी बरतनी चाहिए और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना चाहिए।